EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Nikhil Ranjan
Useful For Prelims
Date: 13 January 2026

स्मृति शेष... दरभंगा राज की अंतिम महारानी कामसुंदरी देवी का निधन... देर शाम राज परंपरा से अंतिम संस्कार हुआ

भारत-चीन युद्ध में 600 किलो सोना व 3 एयरक्रॉफ्ट दान दिया था

रमा रमण आचार्य | दरभंगा

दरभंगा राज की अंतिम महारानी कामसुंदरी देवी का सोमवार की अहले सुबह करीब 3 बजे राज परिवार के कल्याणी निवास में निधन हो गया। वे 93 वर्ष की थीं। कुछ दिनों से बीमार चल रही थीं।

महारानी काम सुंदरी

महारानी कामसुंदरी देवी महाराजा कामेश्वर सिंह की तीसरी पत्नी थीं। वे सादगी, सौम्यता, करुणा और गरिमा की जीवंत प्रतिमूर्ति थीं। देर शाम राज परिवार की परंपरा के अनुरूप उनकी तीसरी व अंतिम पत्नी महारानी कामसुंदरी देवी का दाह संस्कार भी सोमवार को दोनों महारानियों की चिता के पास पूरे विधि-विधान और शाही परंपराओं के साथ किया गया। मुखाग्नि चेचेरे पोते कुमार रत्नेश्वर सिंह ने दी। 1962 के भारत-चीन युद्ध में दरभंगा महाराज ने 600 किलो सोना व 3-3 एयरक्रॉफ्ट दान में दे दिया था।

महाराज की दूसरी महारानी कामेश्वरी व तीसरी महारानी कामसुंदरी देवी मौसेरी बहन थीं

महाराजा कामेश्वर सिंह के साथ धर्मपत्नी महारानी कामसुंदरी देवी। (फाइल फोटो)

महारानी को कोई संतान नहीं थी। देखदेख उनकी बहन रोहिणी दाय के बेटे उदय नाथ झा उर्फ विष्णु कर रहे थे। विष्णु ने बताया कि महारानी कामसुंदरी देवी का जन्म 22 अक्टूबर 1932 को मधुबनी जिले के मंगरौनी में हुआ था। वे हंस मणि झा की चौथी बेटी थीं। 5 मई 1943 में उनकी शादी महाराजा कामेश्वर सिंह से हुई थी। महाराजा की पहली पत्नी का नाम राजलक्ष्मी देवी व दूसरी पत्नी का नाम कामेश्वर प्रिया है। कामेश्वरी प्रिया व कामसुंदरी देवी मौसेरी बहन थीं।

देश के विकास में राजपरिवार का अमूल्य योगदानः कपिलेश्वर

दरभंगा राज के उत्तराधिकारी कुमार कपिलेश्वर सिंह ने कहा कि दरभंगा सहित पूरे देश के विकास में दरभंगा राज परिवार का बहुमूल्य योगदान रहा है। साल 1962 में भारत-चीन के बीच युद्ध हुआ तो सरकार ने मदद की गुहार लगाई थी। इसके बाद दरभंगा राज सबसे पहले मदद के लिए आगे आया था। इंद्रभवन मैदान में 15 मन यानी 600 किलो सोना तौला गया और उसे लड़ाई में मदद के लिए राज परिवार की तरफ से दान में दिया गया था। लड़ाई के लिए तीन-तीन एयरक्रॉफ्ट दान कर दिया। दरभंगा एयरपोर्ट के लिए 90 एकड़ जमीन दी। देश पर जब-जब विपत्ति आई दरभंगा राज परिवार खड़ा उतरा। सबसे आगे बढ़कर देश की मदद की।

गरीब बच्चों की काफी मदद करती थीं : पारस नाथ सिंह

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह फाउंडेशन के पारस नाथ सिंह ठाकुर ने बताया कि महारानी समय के बहुत ही पाबंद थीं। वह सुबह, शाम व रात में खाना खाने के बाद परिसर में टहलती थीं। उनका सुबह उठने, स्नान, पूजा, खाना सहित अन्य क्रियाकलापों का समय निर्धारित था। उदय नाथ झा, गिरिश दत्त झा आदि ने बताया कि वे गरीब बच्चों की पढ़ाई में काफी मदद करती थीं। इन्हें पढ़ाई के लिए दिल्ली भेजते थे। सारे खर्च का वहन करती थीं। बड़ी महारानी राजपति भगवान की पूजा करती थीं। राजपति भगवान का मंदिर बनाने के लिए उन्होंने कल्याणी निवास में 1 बीघा जमीन दान स्वरूप दी।

सोमनाथ मंदिर

दीर्घकालीन संघर्ष का प्रतिबिंब

अटूट आस्था का प्रतीक सोमनाथ का मंदिर हजार वर्षों से अनेक आक्रमण झेलता हुआ भी आज अडिग खड़ा है, जो हिंदू संस्कृति की निरंतरता का परिचायक है

डा. शुभम केवलिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, शहीद भगत सिंह महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

नववर्ष 2026 के आगमन के साथ ही गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित सोमनाथ मंदिर संपूर्ण राष्ट्र के आकर्षण का केंद्र बन गया है। वैसे तो द्वादश ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम स्थान सोमनाथ का ही है, परंतु इस समय इसकी महत्ता सांस्कृतिक संघर्ष से जुड़ी है। भारतीय इतिहास में मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा हिंदू मंदिरों को तोड़े जाने का विषय कोई आश्चर्यजनक नहीं है, परंतु एक ही मंदिर को बार-बार तोड़कर आस्था पर कुठाराघात करने का सबसे बड़ा उदाहरण सोमनाथ का शिव मंदिर है। वस्तुतः सोमनाथ मंदिर के साथ हुई यह बर्बरता कोई कपोल कल्पना नहीं है, अपितु ऐतिहासिक तथ्य है जिसे जानना आवश्यक है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग व अन्य संस्थाओं द्वारा किए गए पुरातात्त्विक अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि सोमनाथ का यह नगर प्रथम शताब्दी ईस्वी से बसाहट का केंद्र था। इसी स्थान पर शिव की आराधना के लिए मंदिर का निर्माण चौथी शताब्दी ईस्वी के पूर्व वलभी शासकों द्वारा करवाया गया था। कालांतर में हिंदू शासकों व आम जनता के द्वारा इस मंदिर को भव्यता प्रदान की गई। इसी भव्यता व हिंदू समाज की अटूट आस्था ने 11वीं शताब्दी ईस्वी में भारत पर कुदृष्टि रखने वालों को आकृष्ट किया, इन्हीं में सर्वप्रमुख था गजनी का आक्रमणकारी महमूद।

दस्तावेजों में उल्लेख है कि महमूद को सोमनाथ बुलाने के लिए संदेश एक स्थानीय फकीर ने दिया था। गजनी से चला आक्रमणकारी महमूद जनवरी, 1026 में सोमनाथ आ पहुंचा। मंदिर को तोड़ने के पूर्व स्थानीय समाज ने उसका अपनी क्षमता अनुसार प्रतिरोध किया, जिस संघर्ष में 50 हजार से अधिक हिंदुओं को बलिदान देना पड़ा। गजनी द्वारा सोमनाथ मंदिर को तोड़े जाने का विवरण केवल भारतीयों ने ही नहीं, अपितु मुस्लिम लेखकों ने भी किया है। मुस्लिम यात्री अल बरूनी के अनुसार, "महमूद के आदेश पर सोमनाथ के शिवलिंग को तोड़ दिया गया, शिवलिंग के एक भाग को गजनी भेजने का आदेश दिया गया, जहां उसे एक मस्जिद के प्रवेश द्वार पर लगाया गया, ताकि नित्य उसे पैरों तले रौंदा जा सके।"

इस बर्बरता का उल्लेख फरिश्ता नामक एक यात्री ने भी किया, उसने लिखा, "सोमनाथ मंदिर में प्रवेश लेने पर जब महमूद ने विशाल शिवलिंग को देखा तो उसे तोड़ने का आदेश दिया, उसकी सेना ने शिवलिंग को तोड़ा व उसके आदेश पर शिवलिंग के कुछ टुकड़े गजनी व कुछ टुकड़े मक्का मदीना भेजे गए।" आस्था पर चोट करने के साथ ही मंदिर और नगर की अकूत संपदा को भी लूट लिया गया। कहा जाता है कि 200 लाख दीनार जितनी धनराशी महमूद द्वारा लूटी गई। आश्चर्य का विषय यह है कि मुस्लिम यात्रियों के लिखे जाने के बावजूद भारतीय इतिहासकार रोमिला थापर ने यह कह दिया कि सोमनाथ के मंदिर को महमूद ने कभी तोड़ा ही नहीं।

खैर मंदिर तोड़कर लौट रहे महमूद पर परमदेव नामक हिंदू राजा ने हमला बोल दिया। युद्ध से बचकर निकलते हुए महमूद सिंध होता हुआ गजनी लौट गया। महमूद के जाने के बाद उसके स्थानीय गवर्नर मीठा खान ने बचे हुए मंदिर को पूर्ण रूप से जमींदोज कर दिया। परंतु हिंदू राजाओं का संघर्ष जारी रहा, कुछ ही समय बाद 11वीं शताब्दी में भीमदेव नामक शासक ने मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया। 1100 ईस्वी के अभिलेख के अनुसार, सिद्धराज नामक एक राजा ने सोमनाथ के दर्शन किए थे, इससे यह स्पष्ट होता है कि इस काल में मंदिर अपने वैभव के साथ विद्यमान था। परंतु

सोमनाथ मंदिर में रविवार को आयोजित भव्य कार्यक्रम में शामिल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। पीआइबी

मंदिर अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रहा। वर्ष 1292 में एक बार पुनः मंदिर पर आक्रमण हुआ। इस बार खिलजियों के एक सेनानायक अल्फ खान ने सोमनाथ की अस्मिता को अपनी बर्बरता से रौंदा। परंतु कुछ ही समय बाद पुनः मंदिर का निर्माण करवाया गया, इस बार खंगार नामक हिंदू राजा ने यह पुनीत कार्य करवाया। विध्वंस और निर्माण का यहां सिलसिला चलता रहा और 1392 ईस्वी में मुजफ्फर खान ने मंदिर का पुनः विध्वंस किया। सोमनाथ मंदिर के साथ यह बर्बरता मुगल काल में भी जारी रही। औरंगजेब ने भी सोमनाथ के मंदिर को तोड़ने का फरमान जारी किया था।

सदियों से चले आ रहे विध्वंस पर अहिल्याबाई ने मरहम लगाया और 18वीं शताब्दी में सोमनाथ मंदिर का पुनः निर्माण करवाय गया। पुनर्निर्माण का यह काल जारी रहा और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संपूर्ण भारतीय समाज द्वारा मिलकर सोमनाथ मंदिर को भव्यता प्रदान की गई। वर्ष 2026 इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि सोमनाथ मंदिर ने बर्बरता से लड़ते हुए एक हजार वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। जिस गजनी के आक्रमणकारी ने सोमनाथ का पहली बार विध्वंस किया था, उसका किला व नगर आज खंडहर स्वरूप है, वहीं सोमनाथ भव्यता के साथ विद्यमान है।

Sci & Tech

खगोल विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने दी जानकारी | विश्लेषण | पृथ्वी जैसे छोटे, पथरीले ग्रहों का पता लगाना अभी कठिन

दूरस्थ ग्रहों के वायुमंडल में जीवन के संकेत तलाशने में जुटे खगोलविद

लंदन, 12 जनवरी (एजंसी)।

खगोल विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक उस सवाल के जवाब के करीब पहुंच रहे हैं जो सदियों से पूछा जा रहा है कि क्या पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जहां जीवन मौजूद है? पिछले तीन दशकों में यह स्पष्ट हो चुका है कि सूर्य अकेला तारा नहीं है, जिसके चारों ओर ग्रह घूमते हैं। अब तक छह हजार से अधिक एक्सोप्लैनेट यानि सौरमंडल के बाहर स्थित ग्रह खोजे जा चुके हैं।

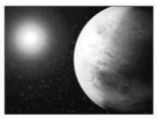

वैज्ञानिकों का मानना है कि दूरबीनों की मदद से इन ग्रहों के वायुमंडल में मौजूद गैसों का अध्ययन कर यह पता लगाया जा सकता है कि कहीं वहां जीवन के संकेत तो नहीं हैं। ग्रह की अपने तारे से दूरी के आधार पर उसके तापमान का अनुमान लगाया जाता है। पृथ्वी की तरह तरल पानी के लिए अनुकूल तापमान को जीवन के लिए एक अहम शर्त माना जाता है और इसमें ग्रह का वायुमंडल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खगोलविद अब सौरमंडल के बाहर स्थित ग्रहों के वायुमंडल में मौजूद अणुओं की पहचान करने में सक्षम हो गए हैं। प्रत्येक रासायनिक तत्व प्रकाश पर एक विशिष्ट 'बारकोड' जैसी छाप छोड़ता है। जब कोई ग्रह अपने तारे के सामने से गुजरता है, तो उसके वायुमंडल से छनकर आने वाले प्रकाश में इन अणुओं के संकेत देखे जा सकते हैं। हालांकि यह तकनीक केवल उन्हीं ग्रहों पर लागू होती है, जो हमारी दृष्टि से तारे के सामने से गुजरते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार, किसी अणु की पहचान उसकी मात्रा और उसके बारकोड की मजबूती पर निर्भर करती है। पृथ्वी के वायुमंडल में नाइट्रोजन सबसे अधिक है, लेकिन इसका संकेत कमजोर होता है, जबकि आक्सीजन, ओजोन, कार्बन डाइऑक्साइड और जलवाष्प जैसे अणुओं के संकेत अपेक्षाकृत मजबूत होते हैं। जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने इन्फ्रारेड तरंगदैर्घ्य में कई एक्सोप्लैनेट के वायुमंडल का अध्ययन किया है और मीथेन, कार्बन डाइआक्साइड तथा पानी जैसे सरल अणुओं की पहचान की है। हालांकि, आंकड़ों की व्याख्या में अंतर के कारण अलग-अलग शोध दल कभी-कभी अलग निष्कर्ष निकालते हैं।

वर्ष 2025 में पृथ्वी से बड़े लेकिन नेपच्यून से छोटे एक ग्रह 'के2-18बी' के वायुमंडल में डाइमिथाइल सल्फाइड पाए जाने का दावा किया गया था, जिसे संभावित जैविक संकेत माना गया। पृथ्वी पर यह गैस समुद्री सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पन्न होती है।

नासा की प्रस्तावित 'हैबिटेबल वर्ल्ड्स आब्जर्वेटरी' पृथ्वी जैसे लगभग 25 ग्रहों का अध्ययन करेगी और उनके वायुमंडल में आक्सीजन जैसे जीवन-संबंधी संकेतों की तलाश करेगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले वर्षों में यह पता लगाने की दिशा में बड़ी प्रगति हो सकती है कि क्या ब्रह्मांड में पृथ्वी के अलावा भी कहीं जीवन मौजूद है।

Hindustan Page

आइआइटी मद्रास ने बनाया रैमजेट तकनीक से चलने वाला तोप का गोला

▸ सफल रहा परीक्षण रक्षा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि, 50 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी तोपों की मारक क्षमता

चेन्नई, प्रेट्र : भारतीय सेना जल्द ही रैमजेट तकनीक से चलने वाले तोप के गोले से दुश्मनों पर और अधिक आक्रामकता से प्रहार करेगी। आइआइटी मद्रास ने सोमवार को घोषणा की कि उसने 155 मिमी के रैमजेट-प्रेरित तोप के गोले विकसित किए हैं। इससे मौजूदा तोपखानों की रेंज या मारक क्षमता 50 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। रक्षा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

आइआइटी मद्रास के एरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर और इस परियोजना के प्रमुख पीए रामकृष्ण ने कहा कि इस तकनीक से भारतीय तोपखाने लगभग 50 प्रतिशत अधिक दूरी पर लक्ष्यों को भेद सकेंगे। यह तकनीक तोप के गोले में पारंपरिक बेस-ब्लीड यूनिट को रैमजेट इंजन में बदलती है। रैमजेट इंजन हवा से आक्सीजन लेकर गोले में लगातार थ्रस्ट पैदा करता है इससे तोप से दागे जाने से लेकर लक्ष्य तक पहुंचने के बीच लगातार गति बनी रहती है। वर्तमान में अधिक दूरी तक लक्ष्य को तबाह करने के लिए महंगी मिसाइलों का इस्तेमाल करना पड़ता है लेकिन भविष्य में तोप के गोले ही लंबी दूरी तक तबाही मचाने में सक्षम होंगे। यह परियोजना 2020 में भारतीय सेना के सहयोग से शुरू की गई थी। कई कठिन परीक्षणों के माध्यम से इस परियोजना पर काम हुआ है, जिसमें आइआइटी में 76 मिमी की तोप पर प्रारंभिक परीक्षण, 155 मिमी प्रणालियों पर पैमाने के परीक्षण और सितंबर 2025 में डिओलाली के आर्टिलरी स्कूल में फील्ड ट्रायल शामिल हैं।

डीआरडीओ ने किया टैंकरोधी निर्देशित मिसाइल का सफल परीक्षण

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला, हैदराबाद द्वारा महाराष्ट्र के अहिल्या नगर स्थित केके रेंज में उच्चतम आक्रमण क्षमता वाली तीसरी पीढ़ी की 'फायर एंड फारगेट' मानव-चालित टैंकरोधी गाइडेड मिसाइल (एमपीएटीजीएम) का 11 जनवरी को सफल उड़ान परीक्षण किया गया।

स्वदेशी रूप से विकसित इस एमपीएटीजीएम में इमेजिंग इंफ्रारेड (आइआइआर) होमिंग सीकर, आल इलेक्ट्रिक कंट्रोल एक्चुएशन सिस्टम, आयुद्ध नियंत्रण प्रणाली, टैंडम वारहेड, प्रणोदन प्रणाली और उच्च प्रदर्शन लक्ष्यीकरण प्रणाली जैसी अत्याधुनिक स्वदेशी प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का अनुसंधान | शोध | गाड़ियों की आवाजाही को सुगम बनाया जा सकेगा

सड़क हादसे रोकेगी कृत्रिम मेधा आधारित तकनीक

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

इंदौर के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) ने देश के यातायात प्रबंधन तंत्र को भविष्य की जरूरतों के मुताबिक 'स्मार्ट' और सुरक्षित बनाने के लिए कृत्रिम मेधा (एआइ) की मदद से नई तकनीक विकसित की है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि इस तकनीक के जरिए वाहन चालकों को वक्त रहते जरूरी संदेश भेजकर संभावित सड़क हादसे रोके जा सकेंगे और गाड़ियों की आवाजाही को सुगम बनाया जा सकेगा। आइआइटी-इंदौर के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर प्रभात कुमार उपाध्याय ने बताया कि ऐसे वक्त जब दुनिया बिना चालक वाली कारों की ओर बढ़ रही है, देश के यातायात तंत्र को 'स्मार्ट' और सुरक्षित बनाया जाना वक्त की मांग है। इसके लिए हमने एआइ और संचार प्रौद्योगिकी की मदद से अगली पीढ़ी के यातायात प्रबंधन तंत्र के लिए नई तकनीक विकसित की है। इस अत्याधुनिक तकनीक को 'सेलुलर वीकल-टू-एवरीथिंग (सी-वी2एक्स)' नाम दिया गया है। इस तकनीक के जरिए चलती गाड़ियों द्वारा दूसरी गाड़ियों को भी आसानी से संदेश भेजे जा सकते हैं जिससे संभावित सड़क हादसों और यातायात जाम को रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि मान लीजिए कि आप कार चला रहे हैं, तो यह तकनीक खराब सड़क, रास्ते पर आगे हुई दुर्घटनाओं और यातायात जाम के बारे में आपकी कार को तुरंत संदेश भेज देगी ताकि आप वक्त रहते सचेत हो जाएं। ये संदेश 4जी एलटीई और 5जी जैसे उच्च गति वाले वायरलेस नेटवर्क का इस्तेमाल करके भेजे जाएंगे। तकनीकी बाधाओं को दूर करने के लिए अनुसंधानकर्ताओं ने 'इंटेलिजेंट रिसोर्स एलोकेशन एल्गोरिदम' विकसित किए हैं जो वास्तविक समय में यातायात की स्थिति, नेटवर्क लोड और सिग्नल की गुणवत्ता के आधार पर खुद को ढाल लेते हैं ताकि जरूरी संदेश तुरंत भेजे जा सकें। आइआइटी-इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने कहा कि सड़क सुरक्षा और टिकाऊ गतिशीलता हमारे समय की सबसे जरूरी चुनौतियों में शामिल हैं।

इस अत्याधुनिक तकनीक को 'सेलुलर वीकल-टू-एवरीथिंग (सी-वी2एक्स)' नाम दिया गया है। इस तकनीक के जरिए चलती गाड़ियों द्वारा दूसरी गाड़ियों को भी आसानी से संदेश भेजे जा सकते हैं जिससे संभावित सड़क हादसों और यातायात जाम को रोका जा सकता है।उन्होंने कहा कि मान लीजिए कि आप कार चला रहे हैं, तो यह तकनीक खराब सड़क, रास्ते पर आगे हुई दुर्घटनाओं और यातायात जाम के बारे में आपकी कार को तुरंत संदेश भेज देगी ताकि आप वक्त रहते सचेत हो जाएं।

Jansatta Page

Dainik Bhaskar

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा

ई-सिगरेट मामले में होगी कड़ी कार्रवाई

रविवार के दिन पेश किया जाएगा बजट

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण अगले वित्त वर्ष के लिए आम बजट एक फरवरी को पेश करेंगी, जो रविवार का दिन है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को यह घोषणा की। सीतारमण का यह नौवां बजट होगा, जो पूर्व वित्त मंत्री मोरारजी देसाई द्वारा प्रस्तुत 10 बजट से एक कम है। संसद के बजट सत्र की शुरुआत 28 जनवरी को लोकसभा में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संसद की संयुक्त बैठक में अभिभाषण के साथ होगी। राष्ट्रपति के अभिभाषण के बाद सीतारमण दोनों सदनों में आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत कर सकती हैं। लोकसभा सचिवालय द्वारा जारी अनंतिम समय सारणी के अनुसार, सदन की बैठक 29 जनवरी को भी होगी। वह एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी, जिसे सरकार ने बजट दिवस घोषित किया है।

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी

संसद में ई-सिगरेट का इस्तेमाल किए जाने के मामले में जांच जारी है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि जांच रपट के बाद मामले में कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि सदन मर्यादा से चलता है और इसका सख्ती से पालन करना होगा। संसद के शीतकालीन सत्र में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद अनुराग ठाकुर ने तृणमूल कांग्रेस के एक सांसद पर सदन में ई-सिगरेट पीने का आरोप लगाया था। संसद में अब तक विभिन्न नई योजनाओं को लागू करके करीब एक हजार करोड़ रुपए की बचत की गई है। इससे संसदीय प्रक्रिया को आसान किया जा सकेगा।

लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि मामले में जांच पूरी होने वाली है। हम समिति की सिफारिश पर कार्रवाई करेंगे। किसी को संसद की गरिमा कम करने का अधिकार नहीं है। सदन में मर्यादा रखनी होगी। अन्यथा नियम प्रक्रिया के तहत कार्रवाई होगी। जब कुछ संवाददाताओं ने पूछा कि क्या सदस्य की सदस्यता जा सकती है, इस पर बिरला ने कहा कि पहले भी (ऐसे मामलों में सदस्यों की) सदस्यता गई है, इसमें भी जा सकती है। इस मामले में ठाकुर का कहना था कि सदन में क्या ई-सिगरेट पीने की अनुमति है?

जब लोकसभा अध्यक्ष ने 'नहीं' में जवाब दिया तो ठाकुर ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस के एक सदस्य पिछले कई दिन से सदन में ई-सिगरेट पी रहे हैं। हालांकि, भाजपा सांसद ने किसी सदस्य का नाम नहीं लिया।

इसरो का रॉकेट मिशन फेल; सभी 16 उपग्रह अंतरिक्ष में गुम, लॉन्च होने के 8वें मिनट में रास्ता भटका, तीसरे चरण के अंत में संपर्क टूटा

नई दिल्ली | इसरो का पीएसएलवी-सी62 रॉकेट मिशन सोमवार सुबह 10:17 बजे लॉन्च हुआ, लेकिन 8 मिनट में असफल हो गया। यह रॉकेट कुल 16 उपग्रहों को अंतरिक्ष में ले जा रहा था। इसरो प्रमुख वी. नारायणन ने बताया कि उड़ान के तीसरे चरण में, जब रॉकेट को ऊंचाई तक ले जाने का काम हो रहा था, तभी तकनीकी गड़बड़ी आ गई। रॉकेट अपने तय रास्ते से भटक गया और उपग्रहों को सही कक्षा में नहीं पहुंचा सका। विस्तृत जांच जारी है।

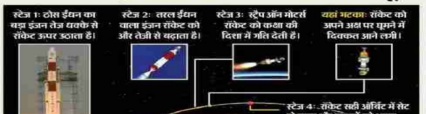

लगातार दूसरी बार... जब साल का पहला प्रक्षेपण असफल

9 महीने में इसरो के दो मिशन फेल, 32 साल में 64 में से 60 बार सफल

अनिरुद्ध शर्मा | नई दिल्ली

पीएसएलवी... इसरो का सबसे भरोसेमंद रॉकेट है। 1993 में पहली बार लॉन्चिंग से लेकर अब तक 64 प्रक्षेपणों में पीएसएलवी रॉकेट केवल 4 बार असफल रहा। ये चंद्रयान-1, मंगलयान, आदित्य एल-1 और एक साथ 104 सैटेलाइट को सफलतापूर्वक गंतव्य तक पहुंचाने का कीर्तिमान बना चुका है। मगर, चिंताजनक ये है कि 9 महीने में ही ये दूसरी बार असफल हुआ।

इससे पहले 18 मई, 2025 को लॉन्च हुआ पीएसएलवी रॉकेट भी तीसरी स्टेज पूरी नहीं कर पाया था। हालांकि तब इसरो अध्यक्ष वी. नारायणन ने बताया था कि रॉकेट के प्रेशर चैंबर में अचानक और अप्रत्याशित दबाव गिरने से मिशन फेल हो गया था।

भास्कर एक्सप्लेनर

अन्वेषा उपग्रह सफल हो जाता तो... सैकड़ों किमी ऊपर से भी पृथ्वी की छोटी-छोटी चीजें साफ देख सकता था

- **16 उपग्रहों में शामिल अन्वेषा क्यों खास?** अन्वेषा उपग्रह डीआरडीओ के लिए बनाया गया एक बहुत एडवांस्ड सैटेलाइट था। यह सीमा सुरक्षा से लेकर मिट्टी के प्रकार और खेतों की स्थिति तक को सटीक बताने में सक्षम था।
- **15 सैटेलाइट्स में कितने विदेशी थे?** 7 देसी व 8 विदेशी उपग्रह थे। इनमें थाईलैंड, नेपाल, ब्राजील, फ्रांस, ब्रिटेन के उपग्रह थे। देसी उपग्रहों में हैदराबाद के स्टार्टअप ध्रुवा स्पेस की ओर से छात्रों के पांच उपग्रह थे। 1. डिमॉन्स्ट्रेशन सैटेलाइट, 2. सीजीयूसैट, 3. डीएसयूसैट, 4. थाईबोल्ट-1, 5. लचित-1... इसके अलावा, रिफ्यूलिंग वाला उपग्रह था।
- **लागत कितनी थी? नुकसान का क्या?** अन्वेषा की लागत करीब 125 करोड़ रु. थी, पीएसएलवी सी62 की लागत भी 150 करोड़ रु. से ज्यादा है। इसका बीमा नहीं था, क्योंकि ये एक सरकारी उपग्रह था। बाकी सैटेलाइट इंश्योर्ड थे।

Dainik Jagaran Page

दृष्टिबाधितों के लिए कर्ट्ज़वेल रीडिंग मशीन पेश किया गया

1976 में आज ही अमेरिका में आविष्कारक रे कर्ट्ज़वेल ने कर्ट्ज़वेल रीडिंग मशीन का सार्वजनिक प्रदर्शन किया था। यह दुनिया का ऐसा पहला व्यावसायिक उपकरण था जो किसी भी मुद्रित सामग्री को कंप्यूटर द्वारा बोले गए शब्दों में अनुवादित करने में सक्षम था।

परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने के लिए विज्ञानियों ने उठाई आवाज

1958 में आज ही 43 देशों के नौ हजार विज्ञानियों ने परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक याचिका पर हस्ताक्षर कर संयुक्त राष्ट्र को सौंपा था। इसमें परमाणु बम परीक्षणों को रोकने का आग्रह किया गया था। इस पहल ने 1963 की आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि में योगदान दिया।

BIHAR

बिहार बन सकता है सेमीकंडक्टर अनुसंधान और डिजाइन का नया केंद्र

जागरण संवाददाता, पटना : मोबाइल फोन पर एक हल्का सा टच, इंटरनेट की तेज गति और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की समझदारी के पीछे एक ऐसी तकनीक काम कर रही है, जो दिखती नहीं, लेकिन यह पूरी दुनिया को नियंत्रित कर रही है। यह तकनीक है सेमीकंडक्टर। ये बातें दैनिक जागरण कार्यालय में आयोजित जागरण विमर्श में आइआइटी पटना के इनक्यूबेशन सेंटर के इंटरप्रेन्योर डा. बिभूति बिक्रमादित्य ने कहीं। उन्होंने दक्षिण कोरिया में लंबे समय तक चिप डिजाइनर के रूप में भी कार्य किया है। उन्होंने कहा कि बिहार सेमी कंडक्टर अनुसंधान और डिजाइन का नया केंद्र बन सकता है। विशेष रूप से गंगा और सोन के तटीय क्षेत्र में इसकी संभावना अधिक है। उन्होंने कहा कि कंडक्टर बिजली को

जागरण विमर्श

गंगा और सोन के तटीय क्षेत्र में इसकी संभावना अधिक, दुनिया के करीब 80 प्रतिशत सेमीकंडक्टर सिलिकान से बनाए जाते हैं

दैनिक जागरण कार्यालय में आयोजित जागरण विमर्श में बिहार में सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री की संभावना विषय पर चर्चा करते विशेषज्ञ, डा. बिभूति बिक्रमादित्य इंटरप्रेन्योर, आइआइटी पटना • जागरण

पूरी तरह प्रवाहित करते हैं और इंसुलेटर उसे रोकते हैं। सेमीकंडक्टर ऐसी स्थिति में काम करता है, जहां नियंत्रित ऊर्जा या दबाव देने पर वह आवश्यकता के अनुसार बिजली का प्रवाह होने देता है या रोक देता है। यही नियंत्रण इलेक्ट्रानिक उपकरणों को सोचने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाता है। आज दुनिया के करीब 80 प्रतिशत सेमीकंडक्टर सिलिकान से बनाए जाते हैं। यह वही सिलिकान है, जिसे शुद्ध कर बालू से प्राप्त किया जाता है। एक वर्ग सेंटीमीटर से भी छोटे चिप में लाखों-करोड़ों ट्रांजिस्टर लगाए जा रहे हैं। सेमीकंडक्टर की असली ताकत इंटीग्रेटेड सर्किट (आइसी) में दिखाई देती है। एक छोटे से सिलिकान चिप पर ट्रांजिस्टर, डायोड जैसे एक्टिव कंपोनेंट और रेजिस्टेंस, कैपेसिटर जैसे पैसिव कंपोनेंट को एक साथ जोड़ा जाता है। यही आइसी मोबाइल फोन, कंप्यूटर, कार, मेडिकल मशीनों और संचार उपकरणों का दिमाग बनती है।

आज मोबाइल फोन, इंटरनेट, इलेक्ट्रिक वाहन, चिकित्सा उपकरण, ये सभी सेमीकंडक्टर पर निर्भर हैं। इन्होंने एआइ को हार्डवेयर-आधारित क्रांति के रूप में वर्णित किया और कहा कि इसके बिना डिजिटल भविष्य की कल्पना संभव नहीं है। सेमी कंडक्टर पूरी वैल्यू चेन है, जिसमें मटीरियल, डिजाइन, बौद्धिक संपदा, इलेक्ट्रानिक डिजाइन आटोमेशन, फैब्रिकेशन, उपकरण, पैकेजिंग, टेस्टिंग और सिस्टम इंटीग्रेशन शामिल हैं। भारत फिलहाल डिजाइन और फैबलेस माडल में मजबूत स्थिति में है। फैब्रिकेशन टूल और मशीनों की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। उन्होंने कहा कि यदि देश में फैब्रिकेशन नहीं होगा, तो केवल डिजाइन के बल पर लंबे समय तक आगे बढ़ना संभव नहीं है। उत्पाद बनेंगे नहीं, तो बाजार में दूसरों पर निर्भर रहना पड़ेगा। इसी वजह से वैश्विक स्तर पर सेमी कंडक्टर फाउंड्री को रणनीतिक संपत्ति माना जा रहा है। भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए भारत सेमीकंडक्टर मिशन को इसी चुनौती से निपटने का प्रयास बताते हुए डा. बिक्रमादित्य ने कहा कि सरकार का लक्ष्य भारत को निर्माता राष्ट्र बनाना है। इसी दिशा में देश में अलग-अलग सेमी कंडक्टर क्लस्टर विकसित किए जा रहे हैं और बड़े पैमाने पर निवेश की घोषणा की गई है। रोजगार की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बेहद महत्वपूर्ण है। आने वाले कुछ वर्षों में सेमी कंडक्टर उद्योग में डिजाइन, फैब्रिकेशन, पैकेजिंग, टेस्टिंग और सप्लाई चेन से जुड़े लाखों अवसर पैदा होंगे। अभी भी करीब ढाई लाख दक्ष युवाओं की जरूरत है, पर मिल नहीं रहे हैं। युवाओं के लिए यह क्षेत्र तकनीकी कौशल के साथ स्थायी रोजगार का माध्यम बन सकता है। 2030 तक 10 लाख कुशल युवाओं की जरूरत इस क्षेत्र को पड़ेगी। बिहार के संबंध में कहा कि आइआइटी पटना में थिन-फिल्म लैब मौजूद है और सेमीकंडक्टर रिसर्च अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन संभावनाएं स्पष्ट रूप से दिख रही हैं।

पिछले दो वर्षों से सेमीकंडक्टर रिसर्च एंड डिजाइन सेंटर, कैपेसिटी बिल्डिंग और पैकेजिंग-टेस्टिंग यूनिट स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। समय रहते निवेश और नीति समर्थन मिला, तो बिहार भी राष्ट्रीय महत्व के सेमीकंडक्टर अनुसंधान और डिजाइन केंद्र के रूप में उभर सकता है। बीईएसए के गठन की तैयारी चल रही है, जिसमें देश के विभिन्न सेमीकंडक्टर सीईओ और प्रोफेशनल शामिल हैं। इसका उद्देश्य बिहार में प्रशिक्षण, डिजाइन, रिसर्च और उद्योग आधारित सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को खड़ा करना है। आने वाले समय में तकनीक, शिक्षा और उद्योग के समन्वय से ही बिहार इस क्षेत्र में अपनी मजबूत पहचान बना सकता है।

Dainik Jagaran Page

गांधी मैदान में बिहार दिवस का आयोजन 22 मार्च से

- शिक्षा विभाग के एसीएस की अध्यक्षता में समिति बनी
- जिला स्तर पर आयोजन को पांच-पांच लाख मिलेंगे

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार दिवस के आयोजन के लिए शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. बी राजेंदर की अध्यक्षता में समिति गठित की गयी। इसमें विभाग और उसके सभी अनुषांगिक संस्थाओं के अफसरों को सदस्य बनाया गया है। सोमवार को अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक में बताया गया कि 22, 23 और 24 मार्च को गांधी मैदान में यह आयोजन होगा। इसके लिए गांधी मैदान में जगह आरक्षित करने का प्रस्ताव है।

बैठक में विभिन्न आयोजनों के लिए उप समितियों के गठन की बात कही गयी। जिला स्तर पर बिहार दिवस आयोजन के लिए बाकायदा पांच-पांच लाख रुपये दिये जायेंगे। तमाम आयोजनों की रूपरेखा बनाने के निर्देश दिये गये। इस बार बिहार दिवस के दौरान संगीत और दूसरे कार्यक्रमों के लिए रूपरेखा बनायी जा रही है। बिहार दिवस समारोह में पुस्तक और व्यंजन मेला विशेष तौर पर लगाये जायेंगे।

कुछ अलग | बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के वैज्ञानिकों ने विकसित की इन विट्रो तकनीक

बिहार में भी अब हो सकेगी केसर की खेती

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार में भी अब केसर की खेती हो सकेगी। बिहार कृषि विश्वविद्यालय (सबौर) के वैज्ञानिकों ने प्लांट टिश्यू कल्चर तकनीक से नियंत्रित तापमान में प्रदेश की जलवायु के अनुकूल केसर के पौधे विकसित किये हैं। इसे इन-विट्रो (कांच के अंदर) प्रत्यक्ष प्रजनन के जरिए विकसित किया गया है। इसे भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय से नौ जनवरी को पेटेंट का प्रमाणपत्र भी मिल गया। केसर की खेती जम्मू-कश्मीर के जलवायु के अनुकूल मानी जाती है। वैज्ञानिकों का कहना है बिहार की जलवायु में केसर की खेती चुनौतीपूर्ण है। किंतु नियंत्रित तापमान, नमी एवं संरक्षित वातावरण में यह संभव है। इन-विट्रो तकनीक से प्राप्त स्वस्थ पौधे का उपयोग पॉलीहाउस, नेट हाउस एवं आधुनिक उद्यानों में किया जा सकेगा। इससे प्रगतिशील किसान, उत्पादक संगठन, उद्यमी और स्टार्टअप केसर उत्पादन कर सकेंगे। शोध के बाद लैब में विकसित कर किसानों को पौधे दिये जायेंगे और खेती का ट्रायल शुरू होगा।

विश्वविद्यालय को पेटेंट का प्रमाणपत्र मिला

- पॉलीहाउस बनाकर नियंत्रित तापमान में बिहार में खेती संभव
- कृषि मंत्री रामकृपाल यादव ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को दी बधाई

राज्य की कृषि को नई दिशा देने में सहायक होगी

कृषि मंत्री रामकृपाल यादव ने वैज्ञानिकों को बधाई दी। कहा कि यह तकनीक किसानों की आय बढ़ाने, कृषि को नई दिशा देने में सहायक होगी। यह पेटेंट ग्रोथ मीडिया कंपोजीशन केसर के तीव्र एवं नियंत्रित इन-विट्रो प्रवर्धन को संभव बनाती है। इससे कम समय में केसर के पौधे तैयार होंगे। इसके पौधे 90-110 दिनों में तैयार होते हैं। सरकार विवि के सहयोग से किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, पायलट परियोजना एवं जागरूकता अभियान चलायेगी।

सात निश्चय-3 से दो लेन की होंगी ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कें

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : बिहार की ग्रामीण सड़कें सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास को तीव्र गति मिली है। अब सात निश्चय-3 से ग्रामीण कार्य विभाग ग्रामीण सड़कों को चरणबद्ध तरीके से दो लेन बनएगा। पहल से प्रखंड, अनुमंडल व जिला मुख्यालय से राज्य उच्च पथ व राष्ट्रीय उच्च पथों को जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण सड़कों को चिह्नित करने का काम शुरू कर दिया गया है।ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी ने बताया कि 20 वर्षों में बिहार ने ग्रामीण सड़कों के निर्माण में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। एक लाख, 20 हजार, 876 बसावटों को संपर्कता प्रदान करते हुए कुल एक लाख, 19 हजार, 915 किमी पक्की बारहमासी सड़कों और 2750 पुलों के नेटवर्क से जोड़ा जा चुका है।

ग्रामीण क्षेत्रों में 909 पुलों का हो रहा है निर्माण

ग्रामीण बसावटों को सुगम एवं निर्बाध संपर्कता प्रदान करने के लिए राज्य में मुख्यमंत्री ग्रामीण सेतु योजना की शुरुआत की गई है। 2024-25 एवं 2025-26 में कुल 909 पुलों के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है। इनमें 670 पुलों के निर्माण का कार्यादेश भी जारी कर दिया गया है। जबकि 239 पुलों का निर्माण निविदा की प्रक्रिया में है।

****

प्रगति यात्रा की योजनाओं को प्राथमिकता में रखें

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटनाः पथ निर्माण विभाग के सचिव पंकज कुमार पाल ने सोमवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा के दौरान सड़क निर्माण की योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रगति यात्रा की योजनाओं को प्राथमिकता सूची में रखा जाए। मुख्य सचिव कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार 16 जनवरी से मुख्यमंत्री की आरंभ हो रही समृद्धि यात्रा के दौरान प्रगति यात्रा के दौरान घोषित योजनाओं की भी समीक्षा होगी। पथ निर्माण विभाग के सचिव ने समृद्धि यात्रा की तैयारियों की भी समीक्षा की। विभाग की विभिन्न परियोजनाओं की अद्यतन प्रगति, गुणवत्ता, समय-सीमा एवं चुनौतियों पर चर्चा की गई। सचिव ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि

समृद्धि यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रगति यात्रा की योजनाओं की भी करेंगे समीक्षा

16 से शुरू होगी यात्रा

प्रगति यात्रा के दौरान घोषित सभी योजनाओं को उच्च प्राथमिकता देकर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए। सचिव ने कहा कि समृद्धि यात्रा के दौरान प्रस्तावित सड़क, पुल एवं अन्य अवसंरचना संबंधी कार्यों की पूर्व तैयारी पूर्ण की जाए, ताकि यात्रा के दौरान सुचारु आवागमन एवं जनता को अधिकतम सुविधा मिल सके। सभी संबंधित अभियंताओं एवं अधिकारियों को परियोजनाओं के शिलान्यास एवं उद्घाटन से संबंधित कार्ययोजना को तत्काल तैयार करने एवं नियमित मानीटरिंग सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

प्रगति यात्रा के दौरान घोषित इन परियोजनाओं पर हुई चर्चा

- जेपी गंगा पथ का पश्चिम में वीर कुंवर सिंह सेतु तक विस्तार
- एम्स गोलंबर-जानीपुर-पईनापुर-नेवा पथ का चौड़ीकरण
- दीदारगंज से आगे मोकामा राजेंद्र सेतु तक संपर्कता
- दानापुर कैंट से मनेर होते हुए बिहटा तक 4 लेन
- फारबिसगंज शहर में सुभाष चौक पर आरओबी का निर्माण
- पूर्णिया में एनएच-107 से एनएच-60 को जोड़ने वाला परोरा बाईपास
- बक्सर में एनएच-922 से गंगा पुल पर स्थित जनेश्वर मिश्रा पुल का संपर्कता

पूर्वी लिंक नहर से कई जिलों में सुदृढ़ होगी सिंचाई व्यवस्था

- पूर्वी लिंक नहर के पुनर्स्थापन का काम अंतिम चरण में
- औरंगाबाद, पटना और गया जिले के किसानों को मिलेगा लाभ

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : जल संसाधन विभाग पूर्वी लिंक नहर के लाइनिंग कार्य को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा रहा है। सरकार की महत्वाकांक्षी योजना सोन नहर प्रणाली, किसानों को समय पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने एवं कृषि उत्पादन में सुधार सुनिश्चित करने की दिशा में एक रणनीतिक कदम है। नहर प्रणाली का आधुनिकीकरण पुराने कमांड क्षेत्रों के विस्तार और उन्नत सिंचाई नेटवर्क के निर्माण से किया जा रहा है, जिससे क्षेत्र की सिंचाई संरचना मजबूत और सतत होगी।

पूर्वी लिंक नहर (कुल लंबाई 10.20 कि.मी.) के पुनर्स्थापन और लाइनिंग का काम अब अंतिम चरण में है। कार्य पूर्ण होने से पटना मुख्य नहर एवं पूर्वी सोन उच्चस्तरीय नहर में जलस्त्राव उपलब्ध कराने में आसानी होगी। इससे पूर्वी लिंक नहर से जुड़े वितरण प्रणालियों में अंतिम छोर तक जल पहुंचाना सुनिश्चित होगा। किसानों को उनकी फसल के लिए आवश्यक पानी समय पर मिलेगा। साथ ही, नहर निरीक्षण और ग्रामीण आवागमन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए 7.46 कि.मी. लंबी बिटुमिनस सेवापथ का निर्माण कार्य भी अब अंतिम चरण में है। प्रयास है कि इस महीने पूर्ण कर लिया जाए। इस पहल से 1539 हेक्टेयर कृष्य कमाण्ड क्षेत्र में प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा और 1,64,102 हेक्टेयर क्षेत्र में अप्रत्यक्ष लाभ सुनिश्चित होगा। सीधे तौर पर औरंगाबाद जिले के बारूण, औरंगाबाद, गोह, रफीगंज, ओबरा, दाउदनगर एवं हसपुरा प्रखंड को लाभ मिलेगा। वहीं, गया जिले के कोंच एवं टेकारी प्रखंड, अरवल जिले के कलेर एवं अरवल प्रखंड, पटना जिले के पालीगंज, दुल्हिनबाजार, नौबतपुर, बिहटा एवं बिक्रम प्रखंड के किसानों को भी इसका लाभ मिलेगा।

Dainik Jagaran Page

राज्य के 38 इंजीनियरिंग कालेजों का होगा उन्नयन, केंद्र से मिलेंगे 30-30 लाख

दीनानाथ साहनी • जागरण

पटना : प्रत्येक क्षेत्र में जिस तरह से आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) सहित नई तकनीक का इस्तेमाल बढ़ रहा है, उसे देखते हुए केंद्र सरकार ने बिहार के तकनीकी शिक्षा लेने वाले युवाओं को इससे जोड़ने की पहल तेज कर दी है।

इस कड़ी में राज्य के सभी 38 राजकीय इंजीनियरिंग कालेजों समेत अन्य तकनीकी संस्थानों को एआइ सहित सभी अत्याधुनिक टेक्नोलाजी से लैस करने का फैसला लिया है। इसके तहत प्रत्येक इंजीनियरिंग कालेज को 30-30 लाख रुपये की

तैयारी

- एआइ सहित सभी तकनीकी से लैस करने की केंद्रीय पहल
- तकनीकी शिक्षा पाने वाले युवाओं को मिलेंगी अत्याधुनिक सुविधाएं

वित्तीय मदद भी दी जाएगी। जिसमें वह अत्याधुनिक व एआइ आधारित प्रयोगशालाओं के विकास व उद्योगों की मांग आधारित तकनीकी शिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा देगी।

विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा नये वित्तीय वर्ष 2026-27 में बिहार के राजकीय इंजीनियरिंग कालेजों का उन्नयन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है।

शिक्षा मंत्रालय एवं अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) द्वारा इंजीनियरिंग कालेजों के इंफ्रास्ट्रक्चर पर तेजी से कार्य करने के लिए जहां राशि उपलब्ध करायी जाएगी, वहीं इन तकनीकी शिक्षण संस्थानों को आइआइटी, ट्रिपलआइटी जैसे देश के शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थान मेंटरिंग करेंगे। शिक्षा मंत्रालय और एआइसीटीई ने इसे लेकर प्रोजेक्ट प्रैक्टिस (प्रोजेक्ट फार एडवांसिंग क्रिटिकल थिंकिंग, इंडस्ट्री कनेक्ट एंड एम्पायबिलिटी) शुरू करने की भी पहल की है। इससे तकनीकी शिक्षा पाने वाले प्रदेश के युवाओं को लाभ मिलेगा। बता दें कि शिक्षा मंत्रालय और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद ने विगत वर्ष 2025 को देश भर एआइ वर्ष के रूप में मनाया था।

यह मिलेगा लाभ : विशेषज्ञों के मुताबिक प्रदेश के अधिकांश इंजीनियरिंग संस्थानों की प्रयोगशालाएं और पढ़ाई पुराने पैटर्न और तकनीक से संचालित हो रही है। जहां उद्योगों की मौजूदा जरूरत की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। यहां मिलने वाली व्यावहारिक शिक्षा भी पुरानी तकनीक व मशीनों पर दी जाती है, जो लंबे समय से चलन से बाहर हो चुकी है। ऐसे में इन संस्थानों से पढ़कर निकलने वाले छात्रों के सामने रोजगार पाने की एक बड़ी चुनौती खड़ी हो जाती है। ऐसे में इन्हें एआइ से लैस और अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं को बनाने से यह समस्या खत्म होगी। आइआइटी और ट्रिपलआइटी जैसे देश के शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थान जब मेंटरिंग की भूमिका निभाएंगे तब पढ़ाई का पैटर्न भी बदलेगा। इसका सीधा लाभ छात्र-छात्राओं को मिलेगा।

एआइ को पढ़ाने वाले तकनीकी संस्थानों को प्राथमिकता

केंद्र सरकार ने विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग को यह निर्देश दिया है कि प्रदर्शन के आधार पर इंजीनियरिंग कालेजों समेत अन्य तकनीकी संस्थानों को वर्गीकृत करें। कम प्रदर्शन करने वाले संस्थानों को सुधार लाने हेतु सपोर्ट करें। इसमें कोर इंजीनियरिंग के साथ एआइ को पढ़ाने वाले संस्थानों को प्राथमिकता के आधार पर केंद्रीय मदद दी जाएगी। चूंकि पहले चरण में केंद्र सरकार ने देश भर के पांच सौ इंजीनियरिंग संस्थानों को अत्याधुनिक बनाने के लिए मदद देने की पहल की है। एआइसीटीई ने इंजीनियरिंग संस्थानों को इसके लिए आवेदन करने को कहा है।

रिनोवेशन के बाद 23 केंद्रों में नई सुविधाएं, जबकि 31 नए सेंटर होंगे; खेलने के साथ पढ़ने-रहने की भी सुविधा

राज्य में मार्च तक 54 एकलव्य सेंटर खुल जाएंगे

- आज 9 केंद्र शुरू होंगे

भास्कर न्यूज | पटना

राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा निखारने के लिए मार्च तक 54 एकलव्य सेंटर खोले जाएंगे। योजना 68 केंद्र खोलने की है, जिनमें से 54 को चिह्नित किया गया है। इनमें पहले से चल रहे 23 केंद्र भी शामिल हैं। इन केंद्रों को पिछले साल जनवरी में रिनोवेशन के लिए बंद किया गया था। अब नई सुविधाओं के साथ इन्हें शुरू किया जा रहा है। इसके अलावा 31 नए एकलव्य सेंटर शुरू होंगे। इनमें खिलाड़ियों को खेल के प्रशिक्षण के साथ पढ़ाई और रहने की सुविधा होगी। इस महीने 17 केंद्र खोलने की तैयारी है। मंगलवार को 9 सेंटर, जबकि 15 जनवरी को 8 केंद्र शुरू होंगे। जिनमें 23 खेल विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस संबंध में खेल मंत्री श्रेयसी सिंह ने समीक्षा बैठक भी की।

पहले चरण में ये केंद्र

- पटना : रेसलिंग (बालक)
- नालंदा : हॉकी (बालक-बालिका)
- सीवान : हैंडबॉल (बालिका)
- बक्सर : कबड्डी (बालक)
- सीतामढ़ी : कबड्डी (बालिका)
- बेगूसराय : ताइक्वांडो (बालक)
- नालंदा : शूटिंग (बालक)
- रोहतास : बास्केटबॉल (बालक)
- कैमूर : वॉलीबॉल (बालक)
- कैमूर : रेसलिंग (बालक)
- औरंगाबाद : बैडमिंटन (बालक)
- कैमूर : एथलेटिक्स (बालक)
- सीवान : वॉलीबॉल (बालक)
- मुंगेर : फुटबॉल (बालक)

एकलव्य सेंटर में दाखिले के लिए पात्रता व सुविधाएं

- **आयुवर्ग :** 12-14 वर्ष, एथलीट्स की संख्या-30, फैसिलिटीज : आवासन, भोजन, ट्रेनिंग फैसिलिटीज व एजुकेशन भी।
- हर महीने 1000 तक स्कॉलरशिप सपोर्ट, 20 हजार तक कॉम्पिटिशन एक्सपोजर, इंश्योरेंस सपोर्ट स्पोर्ट्स साइंस सपोर्ट, एकेडमिक सपोर्ट, कोच की सैलरी बढ़ाने के साथ रिवॉर्ड दिए जाएंगे।
- **दो लेवल का मॉनिटरिंग सिस्टम :** स्टेट लेवल पर एसीएस स्पोर्ट्स और डिस्ट्रिक्ट लेवल पर डीएम
- एकलव्य सेंटरों की डिजिटल मॉनिटरिंग के लिए eEklavya पोर्टल बनाया गया है, जिसके जरिए कहीं से भी ऑनलाइन मॉनिटरिंग की जा सकती है।

मुख्यमंत्री खेल विकास योजना के अंतर्गत एकलव्य सेंटर खोले जा रहे हैं। इनका उद्देश्य कम उम्र में ही प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर आवास, पोषण, आधुनिक खेल संसाधन व अनुभवी प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में उच्चस्तरीय प्रशिक्षण देना है। **-रवींद्रण शंकरण,** महानिदेशक, खेल प्राधिकरण

Dainik Jagaran Page

पूर्वोत्तर तक फास्ट कॉरिडोर... मुंबई-पुणे मॉडल पर बिहार में 5 एक्सप्रेस-वे बनेंगे

मेंटेनेंस पॉलिसी : हर चौराहे पर लिखा होगा मोबाइल नंबर, गड्ढा या क्षतिग्रस्त सड़क की फोटो भेजकर शिकायत कर सकेंगे, तुरंत मरम्मत की व्यवस्था होगी

पॉलिटिकल रिपोर्टर | पटना

बिहार में सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर को नई रफ्तार देने की तैयारी है। पथ निर्माण मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि राज्य में मुंबई-पुणे की तर्ज पर एक्सप्रेस-वे बनाए जाएंगे।

उन्होंने बताया कि पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस-वे को केंद्र सरकार की हरी झंडी मिल चुकी है, जबकि अन्य कॉरिडोर के लिए प्रस्ताव भेजे जा रहे हैं। कुल पांच एक्सप्रेस-वे बिहार के रोड नेटवर्क को नया आकार देंगे। उन्होंने कहा- बिहार में रोड मेंटेनेंस पॉलिसी तैयार की गई है। प्रत्येक चौराहे पर एक मोबाइल नंबर लिखा होगा।

इस दौरान यदि सड़क में गड्ढा है या सड़क क्षतिग्रस्त है, तो उसकी तस्वीर खींचकर मोबाइल नंबर पर भेजना होगा। जिसके आधार पर सड़क की मरम्मत की जाएगी।

पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस-वे

इसे केंद्र सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति मिल चुकी है। इसे पटना से पूर्णिया तक बनाया जाएगा। इससे उत्तर और दक्षिण बिहार की दूरी घटेगी। मिथिला-सीमांचल को राजधानी से सीधा हाई-स्पीड लिंक मिलेगा। कृषि और फूड प्रोसेसिंग उत्पादों को बड़ा बाजार मिलेगा।

गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे

इसका प्रस्ताव तैयार किया गया है। इसकी शुरुआत उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से होगी और यह पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी तक जाएगा। इसे उत्तर बिहार को पूर्वोत्तर भारत से सीधा कनेक्शन मिलेगा। साथ ही सीमावर्ती जिलों में व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

रक्सौल-हल्दिया एक्सप्रेस-वे

इसका प्रस्ताव भी तैयार किया गया है। इसकी शुरुआत रक्सौल (भारत-नेपाल सीमा) से होगी। यह हल्दिया बंदरगाह (पश्चिम बंगाल) तक जाएगा। यह बिहार और नेपाल को सीधे समुद्री बंदरगाह से जोड़ने वाला कॉरिडोर होगा। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार को रफ्तार मिलेगी।

इंटर स्टेट कनेक्टिविटी मजबूत होगी : इनके अलावा चौथे एक्सप्रेस-वे का निर्माण औद्योगिक और लॉजिस्टिक क्षेत्रों को जोड़ने के लिए किया जाएगा। यह माल ढुलाई के लिए फास्ट कॉरिडोर होगा। इससे उद्योगों को गति मिलेगी और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। पांचवें एक्सप्रेस-वे का उपयोग इंटर स्टेट कनेक्टिविटी को मजबूत करने के लिए किया जाएगा। साथ ही नेशनल हाईवे नेटवर्क से फास्ट लिंक विकसित होगा। इससे ट्रैफिक दबाव घटेगा और रोड सेफ्टी बढ़ेगी

Dainik Bhaskar

राष्ट्रीय युवा दिवस

खुद पर भरोसा रख बिना रुके बढ़ते गये, मिलती गयी सफलता

उठो, जागो और तब तक ना रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए। खुद पर भरोसा ही सफलता की सबसे बड़ी ताकत है। डर से भागो नहीं, बल्कि उसका सामना करो। विवेकानंद के कहे इस मूलमंत्र को जीवन में बिहार के कई युवाओं ने उतारा और आगे बढ़ते गए। नतीजा, सफलता मिलती गयी। आज राज्य के ये युवा देश-विदेश में अपना नाम कर रहे हैं। पेश है ऐसे ही कुछ युवाओं की कहानी।

वैभव को असाधारण उपलब्धियों पर मिला राष्ट्रीय बालवीर पुरस्कार

पटना, मुख्य संवाददाता। बिहार के लाल वैभव सूर्यवंशी क्रिकेट जगत में भारत के लिए सबसे बड़े सितारों में से एक बनकर उभरे हैं। अपनी तूफानी बल्लेबाजी से वे नित नए कीर्तिमान गढ़ रहे हैं। इस क्रिकेटर ने असाधारण उपलब्धियों के दम पर 2025 में राष्ट्रपति से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बालवीर पुरस्कार ग्रहण किया। वैभव की कहानी सीख देती है कि सपने साकार करने के लिए समर्पण जरूरी है। समस्तीपुर के ताजपुर के साधारण परिवार से निकल वैभव ने मेहनत और जुनून से क्रिकेट की दुनिया में तहलका मचा दिया। 27 मार्च 2011 को जन्मे क्रिकेटर ने मात्र 12 वर्ष की उम्र में 2024 में रणजी ट्राफी में बिहार के लिए पदार्पण किया। 13 वर्ष की उम्र में आईपीएल नीलामी में राजस्थान रायल्स ने उन्हें खरीदा, जो

- **तूफानी बल्लेबाजी से नित नए कीर्तिमान गढ़ रहे वैभव सूर्यवंशी**

आईपीएल इतिहास का सबसे युवा खिलाड़ी बनने का रिकॉर्ड है। 2025 में आईपीएल में उन्होंने 35 गेंदों में शतक जड़ा, जो एक रिकॉर्ड है। 2026 में यूथ वनडे साउथ अफ्रीका अंडर-19 में उन्हें भारत की कप्तानी मिली, तो खेल और निखर गया। टीम को 3-0 से जीत दिलाई ही, तीनों पारियों में एक शतक और एक अर्धशतक लगा 206 रन बना डाले।

महिमा मौर्या ने प्रधानमंत्री के सामने दी प्रस्तुति

राज्य युवा महोत्सव में चयनित होकर राष्ट्रीय युवा महोत्सव में पहुंची महिमा मौर्या को बेस्ट वाइस ऑफ इंडिया के रूप में चयन किया गया है। किलकारी की संगीत विधा की छात्रा महिमा मौर्या ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने प्रस्तुति दी। 10 सदस्यीय टीम ने वंदे मातरम पर अपनी सामूहिक प्रस्तुति दी और प्रतिभा दिखाई। किलकारी बाल भवन पटना की महिमा मौर्या पहली छात्रा हैं, जिसे लोक संगीत में बेस्ट वाइस ऑफ इंडिया चुना गया।

अर्पित और अभिजीत के आर्सेनिक फिल्टर को मिला अंतरराष्ट्रीय पेटेंट

पानी को आर्सेनिक मुक्त करने के लिए फिल्टर बनाया। इस फिल्टर पर राष्ट्रीय के साथ अंतरराष्ट्रीय पेटेंट भी मिला। अब नॉर्थ ईस्टर्न विवि बोस्टन ने इसकी प्रस्तुति देने के लिए छात्रों को आमंत्रित किया है। किलकारी के विज्ञान विधा के छात्र अर्पित और अभिजीत कुमार के इस आर्सेनिक फिल्टर को देशभर में अव्वल स्थान प्राप्त हुआ था। दोनों को 50 लाख का इनाम भी मिला। इसका आयोजन सैमसंग कंपनी ने किया था। इसमें देशभर से आठ प्रोजेक्ट का चयन किया गया था। इसमें किलकारी के अर्पित और अभिजीत कुमार के प्रोजेक्ट को देश में पहला स्थान मिला। इसे बनाने में डेढ़ लाख का खर्च आता है।

शिक्षा | पहली और दूसरी कक्षा वाले 40 हजार से अधिक विद्यालयों में गतिविधि आधारित पढ़ाई होगी

कठिन पाठ को कहानी और क्राफ्ट से समझेंगे बच्चे

पटना, कार्यालय संवाददाता। बिहार के प्राथमिक विद्यालयों में पहली और दूसरी कक्षा में पढ़ रहे बच्चों के शिक्षण का तरीका अब रोचक और व्यावहारिक होगा। बच्चों को कठिन पाठ केवल किताबों से नहीं, बल्कि क्राफ्ट, नाटक, कहानी, कंचा, मिट्टी के खिलौने जैसी चीजों का उपयोग कर पढ़ाया जाएगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) ने पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों की बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण की रूपरेखा तैयार की है, जिसके तहत अब कठिन अध्यायों को कहानी और क्राफ्ट (शिल्प) के माध्यम से समझाया जाएगा। इसके तहत कठपुतली, गोली, गिल्ली जैसे पारंपरिक खेल भी पढ़ाई का हिस्सा बनेंगे। नई व्यवस्था में कक्षा का 70% समय एक्टिविटी पर शिक्षकों को देना होगा। इसका लक्ष्य 2027 तक सभी प्राथमिक विद्यालयों को निपुण विद्यालय बनाना है। बच्चों को गिनती बोर्ड पर लिखकर नहीं, बल्कि हाथों में कंचा देकर जोड़कर सिखाई जाएगी। इसी तरह जोड़-घटाव के लिए भी गतिविधि आयोजित होगी। भाषा के लिए बच्चों को वर्ड चेन बनाना, कठपुतली से कहानी सुनाना, शब्दों का रेस जैसी गतिविधियां होंगी। एफएलएन-आरसी केंद्र से शिक्षकों को मिलेगा संसाधन और प्रशिक्षण भीराज्य के सभी प्राथमिक विद्यालय को निपुण बनाने के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान संसाधन केन्द्र सभी जिला शिक्षा, प्रशिक्षण संस्थानों, पीटीईसी और बाइट में स्थापित किए गए हैं, जहां से शिक्षक संसाधन और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

- **कटपुतली, कंचा, गिल्ली भी होगा अब बच्चों की पढ़ाई का हिस्सा**
- **एससीईआरटी के नेतृत्व में दो लाख शिक्षकों का होगा उन्मुखीकरण**
- **सभी स्कूलों को निपुण बनाने की कार्ययोजना बनाई गई**

गतिविधि आधारित शिक्षण के लिए आज उन्मुखीकरण

गतिविधि आधारित शिक्षण सुनिश्चित करने के लिए मंगलवार को प्राथमिक कक्षा (पहली और दूसरी कक्षा के शिक्षकों) के लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद की ओर से उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित होगा। यूट्यूब लाइव के माध्यम से शिक्षक जुड़ेंगे। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग और बिहार शिक्षा परियोजना परिषद के प्रतिनिधि द्वारा शिक्षकों का मार्गदर्शन किया जाएगा। इसमें सभी बीईओ, कॉम्प्लेक्स रिसोर्स सेंटर के प्रभारी, सभी विद्यालय के प्रधान (जहां प्राथमिक कक्षाएं संचालित होती हैं) और कक्षा एक और दो में भाषा और गणित पढ़ाने वाले शिक्षक जुड़ेंगे।

क्या है निपुण मिशन

निपुण भारत मिशन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रीय मिशन है। इसका मुख्य लक्ष्य 2026-27 तक देश के हर बच्चे को कक्षा तीन के अंत तक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) में निपुण बनाना है, ताकि वे खुद पढ़, लिख और समझ सकें और गणित की बुनियादी समस्याओं को हल कर सकें।

Dainik Jagaran Page

मंथन : पटना नगर निगम की 19वीं साधारण बैठक में नगर विकास से जुड़े महत्वपूर्ण प्रस्तावों को मिली स्वीकृति

आत्मनिर्भर पटना को आएगा नगरपालिका बॉन्ड

पटना, मुख्य संवाददाता। बुनियादी ढांचा विकास और नागरिक सुविधाओं को बढ़ाने के लिए नासिक की तर्ज पर पटना नगर निगम म्युनिसिपल बॉन्ड (नगरपालिका बॉन्ड) जारी करेगा। इसके माध्यम से लगभग 200 करोड़ तक की पूंजी जुटाने का प्रस्ताव है।

पटना में बढ़ती जरूरत, नागरिकों की जनसंख्या और शहरीकरण की आवश्यकताओं को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। पटना नगर निगम की सशक्त स्थायी समिति की 19वीं साधारण बैठक में सोमवार को इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। महापौर कार्यालय कक्ष, मौर्यालोक कॉम्प्लेक्स में आयोजित बैठक की अध्यक्षता मेयर सीता साहू ने की। इसमें पूर्व में आयोजित 14वीं, 15वीं, 16वीं, 17वीं और 18वीं साधारण बैठकों की कार्यवाही की संपुष्टि की गई। सशक्त स्थायी समिति की चतुर्थ विशेष बैठक (बजट 2025-26) की कार्यवाही को भी अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक में लाए गए प्रस्ताव में इस बात पर चर्चा हुई कि अमृत 2.0 एवं शहरी अवंसरचना परियोजनाओं के तहत जलापूर्ति, सीवरेज, स्वच्छता, यातायात प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षा एवं नागरिक सुविधाओं को विकसित करने की योजना है। इसके लिए बड़े पैमाने पर पूंजीगत निवेश की आवश्यकता है। इस प्रस्ताव पर सहमति बनी कि नगर निगम को अपने वित्तीय स्रोतों के विस्तार की जरूरत है, ताकि शहर को स्मार्ट और आधुनिक बनाया जा सके। इस दिशा में म्युनिसिपल बॉन्ड से 200 करोड़ तक की पूंजी जुटाने के प्रस्ताव पर सहमति बनी। इसके लिए बॉन्ड निर्गम समिति के गठन का प्रस्ताव भी लाया गया। प्रस्ताव के अनुसार इस समिति के मनोनीत अध्यक्ष नगर आयुक्त यशपाल मीणा अध्यक्ष होंगे। अपर नगर आयुक्त राजन कुमार सिन्हा, मुख्य नगर अभियंता बिंदु रजक, नगर निगम के कार्यपालक अभियंता सुशील झा और उप नगर आयुक्त ज्योति प्रकाश सदस्य होंगे।

बैठक में उप महापौर रेशमी कुमारी, नगर आयुक्त यशपाल मीणा सहित सशक्त स्थायी समिति के सभी सदस्य उपस्थित रहे। मौके पर नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य, अग्नि सुरक्षा एवं यातायात से जुड़े कार्यों पर भी निर्णय लिया गया।

मौर्यालोक परिसर स्थित नगर निगम दफ्तर में सोमवार को सशक्त स्थायी समिति की 19वीं साधारण बैठक में महापौर सीता साहू, उप महापौर रेशमी कुमारी और नगर आयुक्त यशपाल मीणा। • हिन्दुस्तान

"नगर निगम का लक्ष्य तेजी से विकास कार्यों का निष्पादन, नागरिक सुविधाओं का विस्तार, पटना को एक स्वच्छ, सुव्यवस्थित और आधुनिक शहर के रूप में विकसित करना है। आत्मनिर्भर पटना बनाने को पहल कर रहे हैं। **-सीता साहू**, महापौर

"राजधानी पटना में मेनहोल मरम्मत, स्ट्रीट लाइट, वेंडिंग जोन सहित अन्य कई सुविधाएं बढ़ेंगी। समिति की 19वीं साधारण बैठक में एकमत से यह निर्णय हुआ कि पार्षद योजना 4.0 का क्रियान्यन किया जाए। **- यशपाल मीणा**, नगर आयुक्त

200 करोड़ तक की पूंजी बॉन्ड के माध्यम से जुटाने का प्रस्ताव, समिति बनाई गई

11 जगहों पर आग से बचाव को फायर हाइड्रेंट लगेंगे

वित्तीय वर्ष 2025-26 में पटना नगर निगम क्षेत्र में विभिन्न वार्डों में सड़क, नाला, पथ निर्माण एवं विकास कार्यों से संबंधित प्रस्तावों की स्वीकृति की गई। साथ ही आग से बचाव के लिए आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा चिह्नित 11 स्थानों पर फायर हाइड्रेंट लगेंगे। इसके अलावा मोहल्लों में मेनहोल निर्माण एवं मरम्मत, मेनहोल एम्बुलेंस के संचालन से जुड़े प्रावधानों तथा विभिन्न स्थानों पर हाई यील्ड बोरिंग के प्रस्तावों पर निर्णय भी किया गया। कई वार्डों में भूगर्भ नाला का निर्माण होगा। वार्ड तीन, सात, 25, 30, 42, 57, 63, 65, 67, 69, 70 सहित सभी अन्य वार्डों में पेयजल आपूर्ति, जलापूर्ति पाइपलाइन विस्तार, ड्रेनेज एवं सड़क सुधार कार्यों से संबंधित प्रस्तावों पर स्वीकृति दी गयी। विभिन्न वार्डों में सामुदायिक भवन निर्माण, पार्क एवं सार्वजनिक स्थलों के विकास, तथा नगर सौंदर्यीकरण से जुड़े प्रस्तावों को मंजूरी दी गई।

पार्षद योजना 4.0 के तहत एक-एक करोड़ की राशि पर भी मुहर

पटना नगर निगम के अंतर्गत सभी वार्डों के लिए बैठक में पार्षद योजना 4.0 पर भी मुहर लगी। इसके तहत सभी वार्डों में एक-एक करोड़ राशि के लिए वार्ड पार्षदों से योजना की अनुशंसा मांगी जाएगी। इसके आधार वार्ड में विकास कार्यों को मजबूती देने पर सहमति बनी। नगर आयुक्त यशपाल मीणा ने कहा कि इस प्रस्ताव पर समिति ने बैठक में सर्वसम्मति से मुहर लगाई है।

पूर्व उपमहापौर ने नगर आयुक्त को बधाई दी

पटना। निगम के 75 वार्डों में पार्षद योजना 4.0 से जुड़ा प्रस्ताव सशक्त स्थायी समिति से पारित होने पर पटना नगर निगम के पूर्व उपमहापौर विनय कुमार पप्पू ने नगर आयुक्त यशपाल मीणा को बधाई दी है। वर्तमान में वार्ड संख्या 28 के पार्षद श्री पप्पू ने कहा कि 01 करोड़ की योजना की स्वीकृति नगर आयुक्त के न्यायपूर्ण कार्रवाई का प्रतिफल है। छह महीने से ज्यादा समय से यह मामला लंबित रखा गया था।

गया जी में पर्यटन विकास को योजना बनी, ₹ 127 करोड़ से फूड कोर्ट बनेगा

पहल

पटना, हिब्यू। बिहार के गयाजी में पर्यटन क्षेत्र के विकास की समेकित योजना बनाई गई है। व्यापक गंतव्य रणनीति और विकास योजना के तहत गयाजी में विकास कार्य होंगे।

पर्यटन विभाग ने इसके लिए व्यापक रणनीति बनाई है। इन क्षेत्रों के विकास की घोषणा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रगति यात्रा के दौरान की थी। विभाग के अनुसार, योजना का प्रस्ताव तैयार कर केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय को मंजूरी के लिए भेजा गया है। इस योजना को शहर के विभिन्न इलाकों के लिए बनाए गए अंतिम मास्टर प्लान में भी शामिल किया गया है। योजना के क्रियान्वयन के लिए कंसल्टेंट की भी नियुक्ति की गई है। जानकारी के अनुसार, इस योजना के तहत विशेष योजना एवं थीम आधारित विकास, पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र का विकास, हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन एवं बस स्टैंड का विस्तार एवं विकास, मल्टी मॉडल सतत परिवहन केंद्र, पार्किंग एवं बोर्डिंग जोन, संरक्षा एवं सुरक्षा, कचरा प्रबंधन का विकास, सड़क किनारे सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

सीताकुंड के पास भगवान विष्णु सांस्कृतिक केंद्र बनेगा : गयाजी के विष्णुपद मंदिर के समीप स्थित सीताकुंड के पास भगवान विष्णु सांस्कृतिक केंद्र बनेगा। कुल 81.19 करोड़ रुपये की लागत से भगवान विष्णु सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण होगा।

हेरिटेज हाट के निर्माण पर 25.48 करोड़ खर्च होंगे

बोधगया में अंतरराष्ट्रीय फूड कोर्ट के निर्माण का प्रस्ताव तैयार किया गया है। इस पर 126.93 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रस्ताव है। साथ ही, वहां हेरिटेज हाट (विरासत बाजार) भी विकसित होगा। हेरिटेज हाट के निर्माण पर 25.48 करोड़ रुपये खर्च होगा।

सहमति : नये सिरे से डीपीआर बनने के बाद होगा जलाशय का निर्माण

इंद्रपुरी जलाशय पर बिहार झारखंड में गतिरोध खत्म

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। सोन नद के जल बंटवारे पर बिहार और झारखंड सैद्धांतिक रूप से सहमत हो गए हैं। अब दोनों राज्यों के बीच एमओयू होगा। इस संबंध में बिहार ने केंद्र को औपचारिक रूप से जानकारी दे दी है। मुख्य सचिव के स्तर पर समझौते की योजना है। शीघ्र ही इसकी तिथि तय होगी।

इस जलाशय के निर्माण से बिहार के आठ जिलों को सीधा लाभ होगा और वहां सिंचाई सुविधा बेहतर होगी। जल बंटवारे के निर्णय के बाद अब बिहार इन्द्रपुरी जलाशय निर्माण की योजना में जुट गया है। इसके लिए डीपीआर बनाने का काम प्रारंभ किया गया है। इस संबंध में प्रस्ताव राज्य मंत्रिपरिषद को भी भेज दिया गया है। वहां से स्वीकृति के बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होगी।

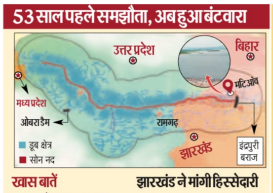

पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में उठा था मुद्दाः पिछले साल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पूर्वी रांची में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में सोन नदी जल बंटवारे का मुद्दा बिहार ने उठाया था। इसके बाद केन्द्र सरकार के हस्तक्षेप और झारखंड के सकारात्मक रूख के कारण बंटवारे को लेकर दोनों राज्यों में औपचारिक सहमति बन गयी थी। इसके बाद हाल में झारखंड ने बिहार को बंटवारे के फार्मूले पर अपनी सहमति की जानकारी दी है। इसके तहत सोन नदी के 7.75 मिलियन एकड़ फीट (एमएएफ) पानी में से बिहार को 5 एमएएफ जबकि 2.75 एमएएफ पानी झारखंड को मिलेगा।

बिहार और झारखंड के बीच भी यह मामला बीते 26 वर्षों से विवाद का कारण बना हुआ था। वाणसागर समझौता 1973 में हुआ था। तब सोन नद के जल को लेकर बिहार और यूपी में विवाद था। लेकिन बिहार बंटवारे के बाद वर्ष 2000 से झारखंड की अपनी मांग थी। झारखंड बिहार के कोटे के पानी में अपनी हिस्सेदारी चाह रहा था। इस तरह 53 साल पहले समझौता हुआ, लेकिन पानी का बंटवारा अब हो रहा है। यही नहीं 36 साल पहले डीपीआर भी सौंपा जा चुका था, लेकिन कार्यान्वयन अब हो पा रहा है।

डूब क्षेत्र को लेकर यूपी से था विवादः रोहतास जिले में इन्द्रपुरी बराज से 80 किलोमीटर दूर मटिआंव में इन्द्रपुरी जलाशय (पुराना नाम कदवन जलाशय) का निर्माण किया जाना था। इसको लेकर 1990 में डीपीआर भी केन्द्रीय जल आयोग को सौंपा गया। लेकिन डैम के 173 मीटर पूर्ण जलाशय स्तर (एफआरएल) पर यूपी को आपत्ति थी। उसके अनुसार इसके कारण उसके ओबरा पनबिजलीघर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता। लिहाजा, उसने इसपर सहमति नहीं दी। मामला उलझ गया। इसके बाद बिहार ने केन्द्र से कई बार अनुरोध किया। इसके बाद कार्ययोजना में संशोधन कर एफआरएल को घटाकर 169 मीटर किया गया। अधिकतम जलस्तर 171 मीटर किया गया। इसके बाद यूपी से सहमति बनी।

53 साल पहले समझौता, अब हुआ बंटवारा

खास बातें

- 1973 में हुआ था वाणसागर समझौता, इन्द्रपुरी से 80 किमी दूर बनना है जलाशय
- रोहतास के मटिआंव में स्थान चयनित, 1990 में डीपीआर बनाकर सौंपा गया केन्द्र को
- 2000 में झारखंड के गठन के बाद से दोनों राज्यों के बीच अटका है मामला

झारखंड ने मांगी हिस्सेदारी

इसके पहले झारखंड राज्य के गठन के बाद उसने सोन नदी के जल में अपनी हिस्सेदारी मांगी। लिहाजा, 7.75 एमएएफ जल का मामला फिर उलझ गया। लगातार बैठकों के बाद भी कोई नतीजा नहीं निकला। इस बीच बिहार ने केन्द्र सरकार से इसको लेकर हस्तक्षेप का अनुरोध किया। फिर पूर्वी क्षेत्र की बैठक में दोनों राज्य सहमत हो गए।

बिहार को फायदा

- पांच एमएएफ पानी मिलेगा
- आठ जिलों पटना, गया, अरवल, भोजपुर, बक्सर, रोहताल, कैमूर, औरंगाबाद में बेहतर सिंचाई होगी
- 150 मेगावाट बिजली का उत्पादन

झारखंड को लाभ

- 2.75 एमएएफ पानी मिलेगा
- पानी का उपयोग सिंचाई या अन्य कार्यों में हो सकेगा
- झारखंड सरकार अपने स्तर से कार्ययोजना तैयार करेगी

जलाशय की विशेषता

- डैम की लंबाई : 3809 मीटर
- डैम की क्षमता : 2239 मिलियन क्यूबिक मीटर

अब क्या होगा डूब क्षेत्र

बिहार	2181 हेक्टेयर
झारखंड	4669 हेक्टेयर
उत्तर प्रदेश	10577 हेक्टेयर

NATIONAL

नवंबर महीने के मुकाबले सब्जियों, मांस-मछली, अंडा, दाल और मसालों की कीमतें तेजी से बढ़ीं

दिसंबर में खुदरा महंगाई 3 माह की ऊंचाई पर

रिपोर्ट

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। बीते महीने के दौरान खुदरा महंगाई दर में बढ़ोतरी दर्ज की गई है जो बढ़कर 1.33 फीसदी रही है। इससे पहले नवंबर में सीपीआई 0.71 फीसदी थी। वहीं, खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर -2.71 फीसदी दर्ज की गई है, जो नवंबर में -3.91 प्रतिशत रही थी।

आंकड़ों से पता चलता है कि सब्जियों, मांस-मछली, अंडा, दाल, मसाले और व्यक्तिगत देखभाल के सामान की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण कुल स्तर पर महंगाई दर में इजाफा हुआ है। सोमवार को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की तरफ से जारी आंकड़ों से पता चलता है कि नवंबर के मुकाबले दिसंबर में महंगाई दर 0.62 अंकों को बढ़ोतरी हुई है लेकिन उसके बाद भी महंगाई दर आरबीआई के अनुमान से कम रही है।

चालू वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में आरबीआई ने महंगाई दर 3.9 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था। ग्रामीण इलाकों में महंगाई दर बढ़कर 0.76 फीसदी रही, जो नवंबर में 0.10 फीसदी थी। वहीं, शहरी क्षेत्रों में महंगाई बढ़कर 2.03 फीसदी पहुंच गई, जो उससे पहले महीने 1.40 फीसदी थी।

0.71 फीसदी थी नवंबर में खुदरा महंगाई दर

1.33 फीसदी हो गई दिसंबर में खुदरा महंगाई दर

2.03 फीसदी महंगाई दर शहरी इलाकों में पहुंची

खुदरा और खाद्य महंगाई का सफर (प्रतिशत में)

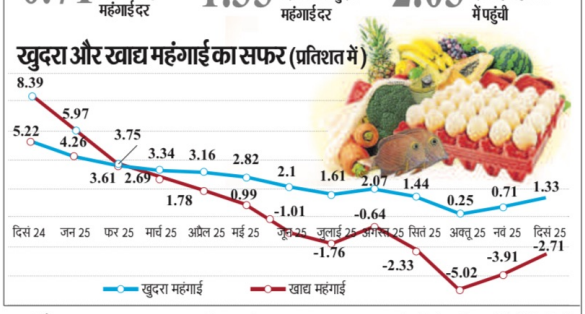

महीने के आधार पर बढ़ी-सालाना आधार पर घटी

महीने के आधार पर देखा जाए तो नवंबर के मुकाबले दिसंबर में सब्जियों, अनाज और मसालों की कीमतें बढ़ीं लेकिन सालाना आधार पर दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में कीमतों में गिरावट आई है। सब्जियों के दाम 18.47% और दालें 15.09% घट गईं। मसालों के दामों में भी 2.15 और अनाजों में 0.35% की नरमी रही। हालांकि तेल के दाम 6.75, फलों के 6.66 और मांस एवं मछलियों के दामों में 5.12% की वृद्धि हुई। राज्यों के लिहाज से देखा जाए तो केरल में सबसे अधिक महंगाई है। वहां बीते महीने औसत महंगाई दर 9.49 % रही है। इसके बाद कर्नाटक में 2.99 फीसदी दर्ज की हई है। इसके बाद आंध्र प्रदेश (2.71%), तमिलनाडु (2.67%) और जम्मू-कश्मीर (2.26%) रही है।

Hindustan Page

विश्व पुस्तक मेला | रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का मंडप आकर्षण का केंद्र

युवाओं की पहली पसंद बनी विज्ञान और रक्षा की किताबें

अनामिका सिंह
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

विश्व पुस्तक मेले में इस बार केवल उपन्यास और कविता ही नहीं, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं, राकेट साइंस और ड्रोन निर्माण से संबंधित किताबें भी युवाओं के बीच चर्चा में हैं। हाल नंबर-5 में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) का मंडप आकर्षण का केंद्र है।

डीआरडीओ के मंडप में करीब 70 किताबें रखी गई हैं, जिनमें 'एअरबोर्न जैमर्स', 'नौसैनिक गैंगवे', 'हाइपरसोनिक तकनीक', 'मैन पोर्टेबल एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल', 'एडवांस टोड आर्टिलरी गन सिस्टम' और तेजस जैसी स्वदेशी तकनीकों पर किताबें शामिल हैं। यहां प्रकाशित मासिक और त्रैमासिक विशेषांक भी मौजूद हैं। युवा इलेक्ट्रानिक्स और सैन्य हथियारों में किए गए प्रयोगों को लेकर सवाल पूछ रहे हैं और संबंधित किताबें खरीद रहे हैं।

नई दिल्ली राइटस टेबल 2026 का शुभारंभ

पुस्तक मेले में राष्ट्रीय व्यापार से व्यापार पहल का उद्घाटन फ्रैंकफर्ट बुक फेयर की उपाध्यक्ष क्लाडिया कैसर ने किया। एनडीआरटी में 85 प्रकाशक भाग ले रहे हैं, जिनमें करीब 40 विदेशी हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष मिलिंद सुधाकर मराठे और निदेशक युवराज मलिक ने गुणवत्ता पर जोर दिया और मेले के केंद्रीय विषय 'भारतीय सैन्य इतिहास: शौर्य एवं प्रज्ञा एट 75' का महत्व रेखांकित किया।

सईद अंसारी की दो पुस्तकों का विमोचन

नई दिल्ली, 12 जनवरी (संवाददाता)।

भारत मंडपम में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में सोमवार को टीवी पत्रकारिता से जुड़ी दो पुस्तकों का विमोचन किया गया।

टीवी चैनलों की दुनिया पर केंद्रित पुस्तकें 'टीवी न्यूज चैनल' और 'न्यूज एंकरिंग-कैमरे की दुनिया' का संयुक्त रूप से एंकर सईद अंसारी और अंकित पांडेय ने लेखन किया है। इस अवसर पर सईद अंसारी ने बताया कि उनकी पुस्तक टीवी न्यूज चैनल समकालीन टेलीविजन समाचार चैनलों की कार्यप्रणाली और व्यावहारिक पत्रकारिता को सरल भाषा में प्रस्तुत करती है। इसमें न्यूज चैनलों के संचालन, खबरों के चयन और प्रस्तुति की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन किया गया है।

दूसरी पुस्तक न्यूज एंकरिंग-कैमरे की दुनिया में एंकरिंग से जुड़े विभिन्न व्यावहारिक और तकनीकी पहलुओं को शामिल किया गया है, जो पत्रकारिता के छात्रों और नए एंकरों के लिए उपयोगी साबित होगी। विश्व पुस्तक मेले में अन्य पुस्तकों का विमोचन भी हुआ। इनमें भावना शेखर की मोह मोह के धागे और सात यशश्वी बालक, आम्ब्रीन जैदी की द साइलेंट वारियर तथा कुमुद शर्मा की हिंदी साहित्य के विवाद संवाद शामिल हैं।

INTERNATIONAL

नई वैश्विक व्यवस्था में पूरक साझीदार के रूप में सहयोग बढ़ाएंगे भारत-जर्मनी

गांधीनगर में सोमवार को भारत-जर्मनी सीईओ फोरम के दौरान चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। प्रेट्र

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के बीच अहमदाबाद में हुई द्विपक्षीय शिखर वार्ता ने भारत और यूरोपीय संघ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी के बीच रणनीतिक साझेदारी को नई गति प्रदान की है। दोनों नेता नई वैश्विक व्यवस्था में एक-दूसरे को पूरक साझीदार के रूप में देखते हुए रक्षा, आर्थिक सहयोग, सेमीकंडक्टर, क्रिटिकल मिनरल्स, ग्रीन हाइड्रोजन और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने पर सहमत हुए। पिछले वर्ष सत्ता संभालने के बाद एशिया में अपने पहले दौरे के लिए भारत का चयन करके मर्ज ने दिल्ली के साथ संबंधों को लेकर महत्वपूर्ण संकेत दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी अपने गृहनगर में जर्मन चांसलर का स्वागत करके और द्विपक्षीय संबंधों के दीर्घकालिक एजेंडे पर हस्ताक्षर कर भारत की रुचि साफ कर दी।

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग से जुड़ी 20 संयुक्त घोषणाओं और सात सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किए, जो वैश्विक चुनौतियों के बीच आपसी विश्वास एवं साझेदारी की मजबूती दर्शाते हैं। मोदी और मर्ज ने इस माह भारत-ईयू फोरम में मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की संभावना जताई, जो दोनों पक्षों के आर्थिक संबंधों को और मजबूत कर सकता है। प्रमुख घोषणाओं में रक्षा औद्योगिक सहयोग को मजबूत करने के लिए नया रोडमैप तैयार करना शामिल है, जो संयुक्त विकास व उत्पादन पर केंद्रित होगा। इससे हथियारों का मिलकर विकास और उत्पादन करने के नए अवसर पैदा होंगे। आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों के बीच सीईओ फोरम गठित की जाएगी।

- पीएम मोदी और चांसलर मर्ज के बीच द्विपक्षीय संबंधों के दीर्घकालिक लक्ष्यों पर फैसले
- बैठक में द्विपक्षीय सहयोग से जुड़ी 20 संयुक्त घोषणाओं और सात सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर
- मोदी और मर्ज ने इस महीने भारत-ईयू फोरम में एफटीए होने की जताई संभावना

प्रमुख घोषणाएं

- रक्षा औद्योगिक सहयोग को मजबूत करने का नया रोडमैप बनेगा
- आर्थिक सहयोग के लिए दोनों देशों के बीच सीईओ फोरम बनेगा
- सेमीकंडक्टर और क्रिटिकल मिनरल्स में सहयोग स्थापित होगा
- गैस, ग्रीन हाइड्रोजन व बायो-इकोनमी क्षेत्र में अलग संयुक्त घोषणाएं
- भारतीय पासपोर्ट धारकों को वीजा फ्री ट्रांजिट की सुविधा देगा जर्मनी
- कूटनीति व रक्षा क्षेत्र में संबंधों पर वार्ता के लिए 1.5 ट्रैक वार्ता शुरू होगी
- हिंद प्रशांत क्षेत्र में सहयोग पर व्यवस्थित द्विपक्षीय वार्ता शुरू करेंगे
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग का विस्तार करेंगे दोनों देश

सेमीकंडक्टर और क्रिटिकल मिनरल्स जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग स्थापित होगा, जो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की मजबूती सुनिश्चित करेगा।

समझौतों से आपसी सहयोग को मिलेगी गति :मोदी पेज>>3

Dainik Jagaran Page

गोल्डन ग्लोब्स में वन बैटल आफ्टर अनदर और हैमनेट का रहा दबदबा

कैलिफोर्निया के बेवर्ली हिल्स में गोल्डन ग्लोब अवार्ड्स समारोह के दौरान ट्राफी के साथ (बाएं से) सारा मर्फी, टेयाना टेलर, पाल थामस एंडरसन और चेज इनफिनिटी। ● रायटर

लास एंजिलिस, एपी : 83वें गोल्डन ग्लोब अवार्ड्स में वन बैटल आफ्टर अनदर और हैमनेट का दबदबा रहा। पाल थामस एंडरसन की फिल्म वन बैटल आफ्टर अनदर ने म्यूजिकल/कामेडी कैटेगरी में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार प्राप्त किया, जबकि क्लोई झाओ की हैमनेट ने ड्रामा कैटेगरी में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता। यह आयोजन कैलिफोर्निया के बेवर्ली हिल्स में किया गया था।

वन बैटल आफ्टर अनदर ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म (म्यूजिकल/कामेडी), सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री (टेयाना टेलर के लिए) और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ पटकथा का पुरस्कार जीता। जेसी बकले को बेस्ट एक्ट्रेस का अवार्ड मिला। सिनर्स ने सर्वश्रेष्ठ संगीत और सिनेमाई एवं बाक्स आफिस सफलता के लिए पुरस्कार जीता। वहीं, टिमोथी चालमेट ने मार्टी सुप्रीम के लिए पहला गोल्डन ग्लोब जीता। यह वार्नर ब्रदर्स स्टूडियो के लिए एक शानदार रात रही। वार्नर ब्रदर्स डिस्कवरी ने 83 अरब डालर के सौदे में नेटफ्लिक्स को बेचे जाने पर सहमति जताई।

व्यक्तित्व

नरेंद्र कुमार : मेक्सिको की सबसे ऊंची चोटी फतह कर इतिहास रचा

जनसत्ता संवाद

भारतीय पर्वतारोही नरेंद्र कुमार के नेतृत्व में एक दल ने हाल में मेक्सिको की सबसे ऊंची चोटी पिको डी ओरिजाबा को फतह किया है। दल ने जमापा ग्लेशियर के कठिन मार्ग से चढ़ाई की। यह रास्ता पिएद्रा ग्रांडे रिफ्यूज से शुरू होता है और आम तौर पर इसे पार करने में सात से आठ घंटे लगते हैं। कठिन परिस्थितियों के बावजूद दल ने संयम, तकनीक और आपसी तालमेल के साथ शिखर तक पहुंच बनाई। नरेंद्र कुमार हरियाणा के रहने वाले हैं। उन्होंने चोटी फतह करने वाले भारतीय पर्वतारोही दल का नेतृत्व करके नाम कमाया है। यह अभियान अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय पर्वतारोहण के लिए महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है। जमापा ग्लेशियर मार्ग को पर्वतारोहियों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस रास्ते पर फिसलन भरी चट्टानें, बर्फीले ढलान और ताजा बर्फ से ढके हिस्से आते हैं। चढ़ाई के दौरान क्रैम्पान और आइस-ऐक्स जैसे तकनीकी उपकरणों का उपयोग करना जरूरी होता है। टीम ने पूरी सावधानी के साथ इन बाधाओं को पार किया। 5,636 मीटर ऊंचा पिको डी ओरिजाबा उत्तरी अमेरिका का सबसे ऊंचा ज्वालामुखी है। पर्वतारोहण की दुनिया में इसे 'वोल्कैनिक सेवन समिट्स' की तैयारी के लिए अहम प्रशिक्षण स्थल माना जाता है।

इस अभियान के तुरंत बाद नरेंद्र कुमार ने 30 दिसंबर को माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप (5,364 मीटर) पर भीषण ठंड और -40 डिग्री सेल्सियस तापमान में भारतीय तिरंगा फहराकर देश का मान बढ़ाया। इस साहसिक अभियान की शुरुआत 24 दिसंबर 2025 को हुई थी। अभियान के दौरान खराब मौसम, तेज बर्फबारी और अत्यधिक ठंड जैसी विषम परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद नरेंद्र कुमार ने अदम्य साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति और अनुशासन के साथ इस अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया। वे मूल रूप से हरियाणा के अंतर्गत हिसार के नलवा हलके के गांव मिंगनी खेड़ के निवासी है। इंस्टाग्राम पर उनके 26 हजार से भी ज्यादा प्रशंसक हैं। वे अन्नपूर्णा और माउंट किलिमंजारो और माउंट ल्होत्से भी फतह कर चुके हैं। वह इंस्टाग्राम पर अपने वीडियो के जरिए पर्वतारोहण सिखाते हैं तथा इसको लेकर लोगों का मार्गदर्शन भी करते हैं। नरेंद्र कुमार ने कहा कि पर्वतारोहण की उनकी यात्रा की शुरुआत वर्ष 2019 में 'अटल बिहारी वाजपेयी इंस्टीट्यूट आफ माउंटेनियरिंग', मनाली से शुरुआती पाठ्यक्रम पूरा करके की। इसके बाद उन्होंने 2021 में 'हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट, दार्जिलिंग' से विस्तृत पाठ्यक्रम पूरा किया।

अमेरिका के लिए भारत जैसा कोई नहीं : गोर

मैत्री की बात ▸ भारत में अमेरिका के नए राजदूत ने संभाला कार्यभार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

अमेरिका के नए राजदूत सर्जियो गोर नई दिल्ली में कार्यभार संभालने के साथ ही अपने 'बास' राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के तल्खी भरे बयानों से भारत और अमेरिका के रिश्तों में आई असहजता को दूर करने की कोशिश में जुट गए हैं। सोमवार को अमेरिकी दूतावास में काम करने वाले कर्मचारियों और कुछ आमंत्रित मेहमानों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में कोई भी दूसरा देश अमेरिका के लिए उतना जरूरी नहीं है, जितना भारत। उन्होंने व्यापार समझौते पर दोनों देशों के बीच मौजूदा असहमति को भी सुलझाने का भरोसा जताया और कहा कि इस बारे में अगली बातचीत मंगलवार (13 जनवरी) को होने वाली है। भारत व अमेरिका के बीच मौजूदा तनाव भरे माहौल की तरफ संकेत करते हुए गोर ने कहा कि सच्चे दोस्तों के बीच असहमति हो सकती है, लेकिन अंत में वे अपने मतभेद सुलझा लेते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यह भी उम्मीद है कि राष्ट्रपति ट्रंप जल्द ही भारत की यात्रा कर सकते हैं।

गोर ने कहा कि कोई भी साझेदार भारत से अधिक आवश्यक नहीं है। आने वाले महीनों और वर्षों में राजदूत के रूप में मेरा लक्ष्य एक बहुत महत्वाकांक्षी एजेंडा को आगे बढ़ाना है। हम इसे सच्चे रणनीतिक साझेदार के रूप में करेंगे, जहां प्रत्येक पक्ष अपनी ताकत, सम्मान और नेतृत्व को मेज पर लाएगा। इसके साथ ही उन्होंने घोषणा की है कि अगले महीने भारत को 'पैक्स सिलिका' का सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। कहा कि जैसे-जैसे दुनिया नई तकनीक को अपनाती जा रही है, इस पहल की शुरुआत से ही भारत और अमेरिका को साथ मिलकर काम करना आवश्यक है।

दोनों देशों के बीच कारोबारी वार्ता के बारे में गोर ने कहा कि दोनों पक्ष सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। व्यापार समझौते पर अगली वार्ता मंगलवार को होने वाली है। भारत दुनिया का एक बड़ा राष्ट्र है। इसलिए इस समझौते को अंतिम रूप देने का काम आसान नहीं है, लेकिन हम इसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप के बीच की मित्रता और दोनों देशों के बीच रिश्तों में आई असहजता की तरफ इशारा करते हुए गोर ने कहा कि मैंने राष्ट्रपति ट्रंप के साथ दुनियाभर की यात्राएं की हैं। मैं इस बात की गवाही दे सकता हूं कि उनकी प्रधानमंत्री मोदी के साथ दोस्ती सच्ची है। अमेरिका और भारत न केवल साझा हितों से जुड़े हैं, बल्कि उच्चतम स्तर पर मजबूत संबंधों से भी जुड़े हैं। सच्चे दोस्त असहमत हो सकते हैं, लेकिन अंत में हमेशा अपने मतभेदों को सुलझा लेते हैं।

- कहा-ट्रंप-मोदी की दोस्ती सच्ची, सच्चे मित्र असहमत हो सकते हैं
- दोनों देशों के बीच आज होगी कारोबारी समझौते पर बातचीत
- अमेरिका के नेतृत्व में गठित पैक्स सिलिका का सदस्य बनेगा भारत

नई दिल्ली में सोमवार को प्रेस को संबोधित करते अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर। एपी

बदलती स्थिति का लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार कर रहा भारत

विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला पर चीन की पकड़ को लेकर पश्चिमी देशों के मन में संदेह है। अमेरिका चीन के साथ व्यापार युद्ध में उलझा हुआ है। इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए भारत खुद को तैयार कर रहा है। भारत में फिलहाल वैश्विक स्तर का एआइ बुनियादी ढांचा मौजूद नहीं है और पैक्स सिलिका के तहत संभावित निवेश और साझेदारी से उसे लाभ मिल सकता है।

क्या है पैक्स सिलिका

पैक्स सिलिका अमेरिकी नेतृत्व वाली एक पहल है। यह एआइ, क्रिटिकल मिनरल्स और तकनीकी आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने पर केंद्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य एआइ और सेमीकंडक्टर की वैश्विक सप्लाई चेन को सुरक्षित करना है। अमेरिका अपने मित्रवत और भरोसेमंद देशों को एक साथ लाना चाहता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रमुख प्रौद्योगिकी सुरक्षित तथा विश्वसनीय रहे और शत्रु देशों के हाथों में जाने से इसे बचाया जाए। वैश्विक विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला पर चीन की पकड़ का मुकाबला करने के लिए अमेरिका ने 12 दिसंबर को यह पहल शुरू की है। जापान, दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन और इजरायल को इसका सदस्य बनाया गया है।

राष्ट्रमंडल देशों के स्पीकर सम्मेलन में पाकिस्तान व बांग्लादेश को बुलावा नहीं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

राष्ट्रमंडल देशों की संसद के अध्यक्षों-पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर संसद को जनता के करीब लाने जैसे अहम वैश्विक मुद्दों पर चर्चा होगी, लेकिन इसमें पाकिस्तान और बांग्लादेश की भागीदारी नहीं होगी। पाकिस्तान को इस वैश्विक आयोजन से दूर रखा गया है, जबकि बांग्लादेश की संसद के अस्तित्व में न होने के कारण उसकी हिस्सेदारी संभव नहीं है।

पीएम नरेन्द्र मोदी 15 जनवरी को संसद के संविधान सदन में इस सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे, जिसमें करीब 60 अध्यक्ष और पीठासीन अधिकारी शामिल होंगे। लोस अध्यक्ष ओम बिरला ने बताया कि इस दौरान पीएम मोदी का विभिन्न देशों से आए स्पीकरों और पीठासीन अधिकारियों से अनौपचारिक संवाद भी होगा।

ओम बिरला ने सोमवार को प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 14-16 जनवरी तक चलने वाले इस तीन दिनी सम्मेलन के पहले दिन कार्यकारी परिषद की बैठक होगी। यह बैठक दिल्ली के लाल किले में आयोजित की जाएगी, जिसकी अध्यक्षता बिरला करेंगे। उन्होंने पाकिस्तान और बांग्लादेश की भागीदारी के सवाल पर स्पष्ट किया कि पाकिस्तान के प्रतिनिधि इसमें नहीं होंगे। उन्होंने इस बारे में टिप्पणी करने से इनकार किया कि पाकिस्तान को बुलाया गया है या नहीं। उन्होंने कहा कि वैश्विक संगठनों की अपनी प्रक्रियाएं होती हैं। बांग्लादेश की स्थिति पर बिरला ने कहा कि वहां की संसद भंग हो चुकी है और वर्तमान में कोई स्पीकर नहीं है।

- प्रधानमंत्री मोदी 15 जनवरी को संसद के संविधान सदन में सम्मेलन का करेंगे उद्घाटन
- ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका आदि देशों के स्पीकर होंगे शामिल

ओम बिरला। फाइल

अब तक 42 देशों की संसद के अध्यक्षों ने सम्मेलन में शामिल होने की पुष्टि की है, जिनमें ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं। बिरला ने कहा कि यह सम्मेलन भागीदारी के हिसाब से राष्ट्रमंडल देशों के अध्यक्षों का अब तक का सबसे बड़ा सम्मेलन होगा। इसमें अंतर-संसदीय संघ (आइपीयू) की अध्यक्ष तुलिया ऐक्सन और राष्ट्रमंडल संसदीय संघ के अध्यक्ष डा. क्रिस्टोफर कलिला भी शामिल होंगे।

लोकसभा अध्यक्ष ने सम्मेलन में चर्चा के विषयों का उल्लेख करते हुए कहा कि इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल, सांसदों पर इंटरनेट मीडिया का प्रभाव, प्रतिभागियों के बीच विचारों का आदान-प्रदान, संसद के प्रति लोगों की समझ बढ़ाना और सांसदों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण जैसे विषयों पर अलग-अलग सत्र होंगे। ओम बिरला ने बताया कि यह सम्मेलन पूरी तरह से पेपरलेस होगा और इसके लिए एक विशेष एप बनाया गया है, जिसके माध्यम से पंजीकरण, यात्रा और सम्मेलन के सत्रों की लाइव चर्चा की जा सकेगी।

लोकसभा में ई-सिगरेट के प्रयोग की बात साबित हुई तो होगी कड़ी कार्रवाई : बिरला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा है कि कार्रवाई के दौरान सदन के भीतर कथित तौर पर ई-सिगरेट के सेवन से जुड़े मामले की जांच में जारी है और यदि इसमें कोई दोषी पाया जाता है तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। संसद की गरिमा और मर्यादा कायम रखने के लिए इसके विरूद्ध किए गए आचरण को स्वीकार नहीं किया जा सकता। हालांकि, उन्होंने साफ किया कि कार्रवाई और सजा का फैसला सदन करेगा स्पीकर नहीं।

राष्ट्रमंडल देशों के संसद के अध्यक्षों के सम्मेलन के संदर्भ में प्रेस वार्ता के दौरान ई-सिगरेट विवाद के बारे में पूछे जाने पर ओम बिरला ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि किसी को भी संसद की पवित्रता को कम करने का अधिकार नहीं है। इस मामले की जांच चल रही है और आगे की कार्रवाई के लिए इसे लोकसभा की एक उचित समिति को भेजा जाएगा।

- लोकसभा अध्यक्ष ने कहा, सांसद की सदस्यता तक जा सकती है मगर इसका फैसला सदन करेगा स्पीकर नहीं
- तृणमूल कांग्रेस सांसद कीर्ति आजाद के खिलाफ भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने आरोप लगाते हुए की है शिकायत

उल्लेखनीय है बीते शीत सत्र के दौरान भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने तृणमूल कांग्रेस के लोकसभा सदस्य पूर्व क्रिकेटर कीर्ति आजाद पर सदन में ई-सिगरेट डिवाइस लाने और इसका इस्तेमाल करने का आरोप लगाते हुए लोकसभा अध्यक्ष से शिकायत की थी। इस शिकायत की ही स्पीकर जांच करा रहे हैं। वैसे तृणमूल कांग्रेस के सांसद आजाद ने विवाद सामने आने के बाद ही ई-सिगरेट का सेवन करने के आरोपों को खारिज करते हुए इसे बेबुनियाद करार दिया था।

आंदोलन और हिंसा के बीच ईरान अमेरिका से वार्ता को तैयार

तेहरान, रायटर : महंगाई के विरोध में राष्ट्रव्यापी हिंसक प्रदर्शनों के बीच ईरान ने कहा है कि वह अमेरिका से वार्ता के लिए तैयार है, लेकिन हमला हुआ तो उसका पूरी ताकत से जवाब दिया जाएगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कहा है कि ईरान वार्ता करना चाहता है, इसलिए अमेरिकी अधिकारियों से उनकी वार्ता हो सकती है। वैसे वह ईरान के विपक्ष के नेताओं के संपर्क में हैं। लेकिन सैन्य कार्रवाई का विकल्प उनके पास है। इस बीच राजधानी तेहरान और अन्य ईरानी शहरों में विरोध प्रदर्शन और हिंसा जारी है। इस हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 544 हो गई है। लगभग 11 हजार लोग गिरफ्तार किए गए हैं। इंटरनेट और टेलीफोन सुविधा पर रोक के कारण सही सूचनाओं का पता नहीं चल रहा है।

- हमला हुआ तो अमेरिकी सैन्य अड्डों और इजरायल पर पलटवार
- ईरान से हो सकती वार्ता, सैन्य कार्रवाई का विकल्प भी खुला : ट्रंप
- आंदोलन के दौरान ईरान में 53 मस्जिदें और 180 एंबुलेंस जलाई गईं
- मरने वालों की संख्या 544 हुई, सैकड़ों घायल, 11 हजार गिरफ्तार

तेहरान में सोमवार को ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अरागची राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन के बारे जानकारी देते हुए। वीडियोग्रैब/रायटर

ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने बताया है कि विदेश मंत्री अब्बास अरागजी और ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विटकाफ आपसी संपर्क में हैं। दोनों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान हो रहा है। इसके लिए हमारा परंपरागत मध्यस्थ स्विट्जरलैंड सक्रिय है। ईरान कभी भी बातचीत का रास्ता बंद नहीं करता है, लेकिन अमेरिका गंभीरता न दिखाते हुए विपरीत संकेत दे रहा है।

इससे पहले विदेश मंत्री अरागची ने तेहरान में विदेशी राजनयिकों के समक्ष अपने देश का पक्ष रखा और बताया कि वह हर मसले पर अमेरिका के साथ वार्ता को तैयार है। ईरानी विदेश मंत्रालय ने ब्रिटेन, इटली, जर्मनी और फ्रांस के तेहरान में नियुक्त राजदूतों को तलब कर उनके देश में हो रहे ईरान विरोधी प्रदर्शनों पर आपत्ति जताई है। कहा कि गलत सूचनाओं पर आधारित विरोध प्रदर्शनों के लिए अनुमति न दी जाए।

अरागची ने बताया कि ताजा आंदोलन में 53 मस्जिदों और 180 एंबुलेंस में आग लगा दी गई। उन्होंने कहा, कोई भी ईरानी नागरिक मस्जिद पर हमला नहीं कर सकता है और न ही उसमें आग लगा सकता है, हिंसा और अराजकता के पीछे अन्य देशों के लोग और एजेंसियां हैं।

इस बीच तेहरान के इंकलाब चौक पर बड़े जनसमूह को संबोधित करते हुए ईरानी संसद के स्पीकर मुहम्मद बाकर खलीफा ने कहा, अगर ईरान पर हमला होता है तो क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य अड्डे और इजरायल हमारे निशाने पर होंगे।

Jansatta Page

EDITORIAL

अंतरिक्ष में बढ़ते कचरे से उपजे खतरे

संचार उपग्रहों से लेकर मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन और सैन्य निगरानी तक, आज की आधुनिक दुनिया की धड़कन अंतरिक्ष से जुड़ी है। मगर इस प्रगति के साथ अंतरिक्ष में बढ़ रहे मलबे से सुरक्षा का संकट भी पैदा हो गया है।

विजन कुमार पांडेय

अंतरिक्ष अब मानव सभ्यता की दूरस्थ सीमा नहीं रहा। आज यह हमारे रोजमर्रा के जीवन, राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और भू-राजनीति का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। संचार उपग्रहों से लेकर मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन और सैन्य निगरानी तक, आधुनिक दुनिया की धड़कन अंतरिक्ष से जुड़ी है। मगर इसी प्रगति के साथ एक ऐसा संकट भी जन्म ले चुका है, जिस पर गंभीरता से चर्चा नहीं होती। वह है- अंतरिक्ष में बढ़ रहा कचरा और उससे अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा को खतरे का मसला। यह केवल तकनीकी चुनौती नहीं, बल्कि मानव जीवन, वैश्विक सहयोग और भविष्य की अंतरिक्ष नीति से जुड़ा प्रश्न है। आज जब दुनिया चंद्रमा, मंगल और उससे आगे मानव की उपस्थिति को लेकर योजना बना रही है, तब यह पूछना अनिवार्य हो जाता है कि क्या हमने पृथ्वी के आसपास के अंतरिक्ष को सुरक्षित रखा है?

पिछले छह दशकों में अंतरिक्ष गतिविधियों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। हजारों उपग्रह, सैकड़ों प्रक्षेपण और अनगिनत प्रयोग। इन सबका एक अनचाहा परिणाम है-अंतरिक्ष में फैल रहा मलबा। निष्क्रिय उपग्रह, टकराव से बने टुकड़े और सूक्ष्म कण आज पृथ्वी की कक्षा में एक अनियंत्रित जाल की तरह फैल चुके हैं। समस्या केवल संख्या की नहीं, बल्कि शृंखलाबद्ध खतरे की है। दो वस्तुओं की टक्कर से मलबा और बढ़ता है, जो आगे और टकराव को जन्म देता है। वैज्ञानिक इसे 'केसलर सिंड्रोम' कहते हैं। यानी एक ऐसी स्थिति, जहां कक्षा में मलबा इतना बढ़ जाए कि अंतरिक्ष गतिविधियां ही असंभव हो जाएं। इस परिदृश्य में सबसे पहले और सबसे ज्यादा खतरे में होंगे मानवयुक्त मिशन और अंतरिक्ष यात्री।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) मानव सभ्यता की सबसे जटिल संरचना है। मगर यह उपलब्धि भी एक असुरक्षित वातावरण में टिकी है। लगभग चार सौ किलोमीटर की ऊंचाई पर यह स्टेशन उसी कक्षा में है, जहां सबसे अधिक मलबा मौजूद है। यह विडंबना ही है कि अत्याधुनिक तकनीक से लैस अंतरिक्ष यात्री एक ऐसे वातावरण में काम करते हैं, जहां पेंट का एक कण भी प्राणघातक बन सकता है। सात से आठ किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से घूमता मलबा किसी भी मानवीय प्रतिक्रिया से कहीं तेज है। यानी खतरे की स्थिति में निर्णय का समय सेकंड से भी कम होता है। यहां यह सवाल उठता है कि क्या हम अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा को केवल तकनीकी प्रबंधन का विषय मान कर संतुष्ट हो सकते हैं या यह एक गहरे नीति-स्तरीय हस्तक्षेप की मांग करता है?

आज अंतरिक्ष मलबे से बचाव का सबसे अहम आधार है- निगरानी और पूर्व चेतावनी। शक्तिशाली रडार और दूरबीन हजारों वस्तुओं की निगरानी करते हैं। मगर इस व्यवस्था की एक मौलिक सीमा है। केवल बड़े टुकड़ों का ही सटीक रूप से पता किया जा सकता है। लाखों छोटे कण ऐसे हैं, जो निगरानी तंत्र से बाहर हैं। मगर उनके टकराने की संभावना बनी रहती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा एक आंशिक जानकारी पर आधारित है, पूर्ण नियंत्रण पर नहीं। जब पृथ्वी की कक्षा में घूमता कोई अंतरिक्ष मलबा अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बहुत

पास से गुजरने वाला होता है, तब स्टेशन की कक्षा को थोड़ी देर के लिए बदला जाता है। यह उपाय अब अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा का एक नियमित हिस्सा बन चुका है। मगर यही तथ्य अपने-आप में यह बताने के लिए काफी है कि अंतरिक्ष कचरे की समस्या कितनी गंभीर हो चुकी है।

> दुनिया को यह बात समझनी होगी कि अंतरिक्ष में बढ़ते मलबे से निपटने का स्थायी समाधान बचाव नहीं, बल्कि सफाई है। मगर यही वह बिंदु है, जहां वैश्विक राजनीति और राष्ट्रीय हित आड़े आ जाते हैं। किसका मलबा हटाया जाए? कौन खर्च उठाए? ये सवाल तकनीक से ज्यादा राजनीतिक हैं। जब तक अंतरिक्ष को साझा विरासत मान कर जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, तब तक यह पहल सीमित प्रयोगों तक ही सीमित रहेगी। भारत जल्द ही गगनयान मिशन की ओर बढ़ रहा है। इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष मलबा अब भारत के लिए भी सैद्धांतिक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष मानवीय जोखिम बन चुका है।

कक्षा बदलना देखने में भले ही एक छोटा सा तकनीकी कदम लगे, लेकिन इसके पीछे बड़ी कीमत छिपी होती है। अंतरिक्ष स्टेशन अपने आप नहीं घूमता, बल्कि उसे सही कक्षा में बनाए रखने के लिए लगातार ईंधन की जरूरत पड़ती है। जब भी स्टेशन को ऊपर या नीचे किया जाता है, तो इंजन चलाए जाते हैं। इससे कीमती ईंधन खर्च होता है। यह ईंधन सीमित होता है और भविष्य की आपात स्थितियों के लिए भी बचा कर रखना पड़ता है। यानी हर बार कक्षा बदलने से स्टेशन की जीवन अवधि थोड़ी कम हो जाती है। इसका दूसरा असर स्टेशन के संसाधनों पर पड़ता है। कक्षा बदलने की प्रक्रिया के दौरान वैज्ञानिक प्रयोगों को रोकना पड़ता है।

दीर्घकालिक अभियानों के लिए यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को दशकों तक काम करने के लिए तैयार किया गया है। मगर बार-बार होने वाले कक्षा परिवर्तन उसकी संरचना, उपकरणों और योजनाओं पर दबाव डालते हैं। जितनी बार ऐसे बदलाव होंगे, उतना ही अधिक जोखिम भविष्य के अभियानों के लिए पैदा होगा। दूसरे शब्दों मे कहें तो मलबे से बचने की कोशिश करते-करते हम खुद अपनी अंतरिक्ष क्षमता को सीमित कर रहे हैं। सबसे अहम बात यह है कि कक्षा बदलना समस्या का समाधान नहीं, बल्कि उसका अस्थायी इलाज है। अंतरिक्ष स्टेशन की कक्षा बदलने की बढ़ती घटनाएं एक बड़ी चेतावनी हैं। ये बताती हैं कि अंतरिक्ष में कचरे का बढ़ता दायरा अब भविष्य का खतरा नहीं, बल्कि वर्तमान की समस्या बन चुका है।

इसलिए कक्षा बदलने को तकनीकी सफलता मानने के साथ-साथ इसे एक चेतावनी संकेत के रूप में भी देखना जरूरी है कि अंतरिक्ष को हमने जितनी तेजी से इस्तेमाल किया है, उतनी ही तेजी से उसे साफ और सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी भी निभानी होगी। हालांकि अंतरिक्ष स्टेशन को विशेष ढालों से सुरक्षित किया गया है, जो छोटे मलबे को झेल सकती हैं, लेकिन बड़ा मलबा अब भी गंभीर खतरा बना हुआ है। आपात स्थितियों के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को कठोर प्रशिक्षण दिया जाता है। मगर यह प्रशिक्षण भी उस स्थिति में सीमित हो जाता है, जब टकराव अचानक और विनाशकारी हो। अंतरिक्ष में बढ़ते कचरे से निपटने का स्थायी समाधान बचाव नहीं, बल्कि सफाई है। मगर यही वह बिंदु है, जहां वैश्विक राजनीति और राष्ट्रीय हित आड़े आ जाते हैं। किसका मलबा हटाया जाए? कौन खर्च उठाए? क्या किसी देश का निष्क्रिय उपग्रह दूसरे देश द्वारा हटाया जा सकता है? ये सवाल तकनीक से ज्यादा राजनीतिक हैं। जब तक अंतरिक्ष को साझा विरासत मान कर संयुक्त जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, तब तक मलबा हटाने की पहल सीमित प्रयोगों तक ही सिमटी रहेगी।

भारत गगनयान मिशन की ओर बढ़ रहा है। इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष मलबा अब भारत के लिए भी सैद्धांतिक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष मानवीय जोखिम बन चुका है। यह चेतावनी भी है और अवसर भी। चेतावनी इसलिए कि लापरवाही भविष्य में भारी पड़ सकती है। अवसर इसलिए कि भारत जिम्मेदार और नैतिक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में वैश्विक नेतृत्व दिखा सकता है। अंतरिक्ष मानवता की साझा संपदा है, न किसी एक देश की और न किसी एक पीढ़ी की। इसने हमें संचार, विज्ञान और भविष्य के सपने दिए हैं, लेकिन आज वही अंतरिक्ष मलबे से भरता जा रहा है। अंतरिक्ष को गंदा करना आसान है, पर सुरक्षित रखना कठिन। इसके लिए दूरदर्शिता चाहिए, ताकि तात्कालिक लाभ से ऊपर उठकर भविष्य को बचाया जा सके। संयम चाहिए, ताकि हर देश जिम्मेदारी से व्यवहार करे और वैश्विक सहयोग चाहिए, क्योंकि अंतरिक्ष किसी सीमा में नहीं बंधा है।

विश्व आर्थिक मंच ने जारी की रपट | **सर्वेक्षण** | बदलाव के लिए युवा राजनीति में आने को तैयार

अमीर-गरीब की बढ़ती असमानता सबसे बड़ी आर्थिक चिंता

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

वैश्वक स्तर पर बढ़ती आर्थिक असमानता लगातार चिंता बढ़ा रही है। तमाम वैश्विक रपटें आंकड़ों के माध्यम से चेता रही हैं कि भारत समेत विश्व में संपन्न और विपन्न के बीच खाई लगातार बढ़ रही है। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) ने अपनी ताजा सर्वेक्षण रपट में कहा है कि दुनिया भर के युवाओं के लिए अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता सबसे बड़ी आर्थिक चिंता बनकर उभरी है और युवाओं की एक बड़ी संख्या केवल आलोचना करने के बजाय खुद राजनीति में भी उतरने को तैयार है।

इससे पहले आक्सफैम की पिछले वर्ष की आई रपट, विश्व असमानता रपट 2026 और वैश्विक संपत्ति रपट 2025 में भी भारत समेत दुनिया में अमीर व गरीब के बीच

बढ़ रही आर्थिक असमानता पर चिंता जताई गई है।

डब्ल्यूईएफ की तरफ से सोमवार को जारी रिपोर्ट 'यूथ पल्स 2026: बदलती दुनिया के लिए अगली पीढ़ी की सोच' में 48.2 प्रतिशत युवाओं ने अमीर एवं गरीब के बीच बढ़ती असमानता को भविष्य को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा आर्थिक रुझान बताया। हालांकि, उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में उद्यमिता को सबसे प्रभावशाली आर्थिक ताकत माना गया है, जो नवाचार एवं आत्मनिर्भरता के प्रति बढ़ते भरोसे को दर्शाता है।

सर्वेक्षण के मुताबिक, 57 फीसद से अधिक युवाओं ने वित्तीय चिंताओं को तनाव और चिंता का प्रमुख कारण बताया। इस रिपोर्ट में 144 देशों और क्षेत्रों के 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के करीब 4,600 युवाओं के विचार शामिल किए गए हैं। रपट के मुताबिक, युवाओं की प्राथमिकताएं व्यावहारिक और नीति-उन्मुख हैं। रोजगार सृजन (57.2 फीसद), सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच (46.1 फीसद) व किफायती आवास एवं वित्तीय स्वतंत्रता (32.2 फीसद) को सबसे सशक्त उपायों के रूप में चिह्नित किया गया।

विश्व विश्व आर्थिक मंच की तरफ से जारी रपट 'यूथ पल्स 2026: बदलती दुनिया के लिए अगली पीढ़ी की सोच' में 48.2 फीसद युवाओं ने अमीर एवं गरीब के बीच बढ़ती असमानता को भविष्य को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा आर्थिक रुझान बताया। सर्वेक्षण के मुताबिक, 57 फीसद से अधिक युवाओं ने वित्तीय चिंताओं को तनाव और चिंता का प्रमुख कारण बताया।

युवाओं ने सकारात्मक बदलाव लाने में सामुदायिक नेताओं को सबसे प्रभावी बताया, जिससे स्थानीय और जवाबदेह नेतृत्व की मांग झलकती है। वहीं, 36 फीसद युवाओं ने कहा कि वे राजनीतिक पद के लिए चुनाव लड़ सकते हैं। यह आंकड़ा युवाओं के राजनीतिक रूप से उदासीन रहने की धारणा को चुनौती देता है। भारत में भी युवाओं के सक्रिय रूप से राजनीति में उतरने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों से अपील की जाती रही है। सर्वेक्षण में जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी वैश्विक चिंता के रूप में सामने आया।